mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-41 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
11 फरवरी 2025 मंगलवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

टेनिस स्टार सानिया...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

बांग्लादेश और भारत में तनाव के बीच होने वाली है पहली उच्च स्तरीय वार्ता

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश और भारत में चल रहे तनाव के बीच पहली उच्च स्तरीय बैठक होने की संभावनाएं जताई जा रही हैं। बांग्लादेश के विदेश मामलों के सलाहकार मोहम्मद तौहीद हुसैन

भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों में और तनाव को रोकने के प्रयासों के तहत अगले सप्ताह ओमान में हिंद महासागर सम्मेलन के दौरान विदेश मंत्री एस.जयशंकर के साथ बैठक कर सकते हैं। आठवां हिंद महासागर सम्मेलन (आईओसी 2025) 16-17 फरवरी को मस्कट में आयोजित होने वाला है। नयी दिल्ली स्थित शोध संस्थान 'इंडिया फाउंडेशन' द्वारा ओमान के विदेश मंत्रालय के सहयोग से आयोजित यह सम्मेलन क्षेत्रीय संवाद के लिए एक प्रमुख मंच के रूप में कार्य करता है। 'प्रोथोम आलो' अखबार की खबर के मुताबिक दोनों नेताओं के बीच सम्मेलन के दौरान बैठक तय है। राजनयिक सूत्रों ने रविवार को संकेत दिया कि बांग्लादेश इस बैठक का इस्तेमाल दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में और तनाव रोकने के लिए संदेश देने के वास्ते कर सकता है।

लंदन के स्टेशन पर बंगाली भाषा ने मचाया बवाल

लंदन (एजेंसी)। लंदन के रेलवे स्टेशन पर बंगाली भाषा को लेकर बवाल मचा है। यह मामला अब अमेरिका तक पहुंच गया है। आइये आपको बताते हैं कि लंदन के रेलवे स्टेशन पर बंगाली भाषा में ऐसा क्या लिख दिया गया है, जिसे लेकर ब्रिटेन में हंगामा मचा है। अमेरिकी खरबपति एलन मस्क

भी इस विवाद के बीच कूद पड़े हैं। मस्क ने ब्रिटिश सांसदों की मांग का समर्थन किया है। बता दें कि ब्रिटेन के एक सांसद ने लंदन के व्हाइटचैपल स्टेशन पर बंगाली भाषा में लिखे 'साइनबोर्ड' पर गहरी आपत्ति जताई है। सांसद का कहना है कि यह केवल अंग्रेजी में ही लिखा होना चाहिए। एलन मस्क ने सांसद की बात का समर्थन किया है। ग्रेट यारमाउथ से सांसद रूपर्ट लोव ने अपने आधिकारिक 'एक्स' अकाउंट पर एक तस्वीर पोस्ट की जिसमें व्हाइटचैपल स्टेशन पर अंग्रेजी और बंगाली भाषा में लिखा साइनबोर्ड दिखाई दे रहा है। लंदन के रेलवे स्टेशन पर सूचना बंगाली भाषा में लिखी गई है। इसे ही लेकर ब्रिटेन में बवाल है। लोव ने रविवार को अपने पोस्ट में कहा,'' यह लंदन है - स्टेशन का नाम अंग्रेजी में होना चाहिए केवल अंग्रेजी में।'' सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं ने लोव के पोस्ट पर मिली-जुली प्रतिक्रियाएं दी हैं। कुछ ने उनके विचारों का समर्थन किया, जबकि अन्य ने कहा कि दो भाषाओं में साइनबोर्ड होना ठीक है। मस्क ने भी इस पोस्ट पर टिप्पणी कीं। उन्होंने कहा,''हां''। पूर्वी लंदन में बांग्लादेशी समुदाय के योगदान को सम्मान देने के लिए 2022 में व्हाइटचैपल स्टेशन पर बंगाली भाषा में साइनबोर्ड लगाया गया था।

ममता कुलकर्णी ने दिया महामंडलेश्वर पद से इस्तीफा

नई दिल्ली (एजेंसी)। बॉलीवुड एक्ट्रेस से साध्वी बनी ममता कुलकर्णी से जुड़ी बड़ी खबर सामने आई है। ममता कुलकर्णी ने महामंडलेश्वर पद से इस्तीफा दे दिया है। ममता कुलकर्णी ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम पर वीडियो पोस्ट करके ये जानकारी दी है। उन्होंने वीडियो में कहा, मैं महामंडलेश्वर यामाई ममता नंद गिरि अपनी पोस्ट से इस्तीफा दे रही हूं। आज किन्नर अखाड़े या दोनों अखाड़ों में मुझे लेकर समस्याएं हो रही हैं, मैं 25 साल से एक साध्वी थी और हमेशा साध्वी रहूंगी। मुझे महामंडलेश्वर का सम्मान दिया गया था। लेकिन ये कुछ लोगों के लिए आपत्तिजनक हो गया था। चाहें वो शंकराचार्य हों, या कोई और हों। मैंने तो बॉलीवुड को 25 साल पहले ही छोड़ दिया था। ममता कुलकर्णी ने कहा कि मेकअप और बॉलीवुड से इतना दूर कौन रहता है। लेकिन मैंने 25 साल तपस्या की। मैं खुद गायब रही। मुझे लेकर लोग प्रतिक्रिया देते हैं कि मैं ये क्यों करती हूं, या वो क्यों करती हूं। नारायण तो संपन्न हैं, वो भगवान हैं, महायोगी हैं, लेकिन देवता भी मेरे सामने अपने श्रंगार में आए थे। ममता ने कहा कि एक शंकराचार्य ने कहा कि ये दो अखाड़ों के बीच ममता फंस गई। लेकिन मेरे गुरू स्वामी चैतन्य गगन गिरी महाराज हैं, जिनके सानिध्य में मैंने 25 साल तपस्या की है। उनकी बराबरी में मुझे कोई नहीं दिखता। मेरे गुरू बहुत ऊंचे हैं। सबमें अहंकार है, आपस में झगड़ रहे हैं। मुझे किसी कैलाश या हिमालय में जाने की जरूरत नहीं है। सब ब्रह्मांड मेरे सामने है। ममता ने कहा कि आज मेरे महामंडलेश्वर बनने से जिनको आपत्ति हो गई है, चाहें वो हिमांगी हों या कोई और, मैं उनके बारे में कुछ नहीं कहूंगी। इन लोगों को ब्रह्म विद्या के बारे में कुछ नहीं पता है। मैं बस इतना कहना चाहती हूं कि मैं लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी का सम्मान करती हूं।

एकनाथ शिंदे को नहीं मिली प्राधिकरण में जगह

महाराष्ट्र की राजनीति में दरार की सियासी अटकलें तेज

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र की राजनीति में महायुति में दरार की सियासी अटकलें तेज हो गई हैं। दरअसल, राज्य के उपमुख्यमंत्री और शिवसेना के प्रमुख एकनाथ शिंदे को राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMA) में शामिल नहीं किया गया है। हालांकि, SDMA प्राधिकरण में उपमुख्यमंत्री और एनसीपी के प्रमुख अजित पवार को शामिल किया गया है। इस घटना के बाद से महाराष्ट्र के राजनीतिक हलकों में हलचल तेज है और सत्तारूढ़ गठबंधन महायुति में दरार की बातें सामने आने लगी हैं।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार ने हाल ही में राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण SDMA का पुनर्गठन किया है। इस प्राधिकरण के अध्यक्ष देवेंद्र फडणवीस हैं। वहीं, इसकी मुख्य कार्याधिकारी राज्य की मुख्य सचिव सुजाता सौनिक हैं। SDMAकी 9 सदस्यों वाली टीम में डिप्टी सीएम अजित पवार को भी जगह मिली है।

हालांकि, इसमें डिप्टी सीएम और शहरी विकास विभाग के प्रमुख एकनाथ शिंदे को शामिल नहीं किया गया है।

साल 2005 में महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में विनाशकारी बाढ़ आई थी। इसके बाद राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण SDMA का गठन किया गया था। स्थ्रू का नेतृत्व राज्य के मुख्यमंत्री के हाथों में होता है। ये आपदा प्राधिकरण आपातकालीन कदमों के समन्वय में काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

आपको बता दें कि आपदा से निबटने की कोशिशों में शहरी विकास विभाग की अहम भूमिका होती है। विभाग की अधिकारियों और बुनियादी ढांचे की राहत एवं पुनर्वास कार्य के समन्वय में बड़ी भूमिका होती है। हालांकि, विभाग के प्रमुख होने के बावजूद एकनाथ शिंदे को SDMA में जगह नहीं मिली। इस कारण ही महायुति में दरार की अटकलें और तेज हो गई हैं। बता दें कि महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ महायुति में भाजपा, शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजित पवार की एनसीपी शामिल हैं।

महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री का बेटा हुआ गायब, जांच में जुटी पुलिस

पुणे (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे जिले से एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। राज्य के पूर्व मंत्री तानाजी सावंत के बेटे का अपहरण हो गया है। प्राथमिक जानकारी के अनुसार, पुणे के सिंहगढ़ पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने तुरंत मामले की जांच शुरू कर दी है। हालांकि, फिलहाल पुलिस का कहना है कि बेटा लापता है और हर एंगल से मामले की जांच की जा रही है। पुलिस जल्द ही इस पर और अधिक जानकारी देगी।बीते दिनों महाराष्ट्र के पालघर जिले के दहानु से एक शिवसेना नेता के अपहरण के सिलसिले में चार लोगों को गिरफ्तार किया गया था। शिवसेना नेता अशोक धोडी 20 जनवरी को घोलवाड़ से लापता हो गए थे। पुलिस में उनके परिजनों द्वारा दी गई शिकायत के आधार पर मामला दर्ज किया गया था। मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया गया और दहानु अदालत ने उन्हें सात दिन की हिरासत में भेज दिया था।

यूट्यूबर रणबीर अल्लाहबादिया के विवाद पर बोले सीएम देवेंद्र फडणवीस

शिवसेना ने भी दी चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियाज गॉट लैटेंट शो में यूट्यूबर रणवीर अल्लाहबादिया की ओर से दिए गए विवादित बयान को लेकर विवाद बढ़ता ही जा रहा है। अल्लाहबादिया पर शो में अभद्र भाषा का इस्तेमाल करने और अश्लीलता को बढ़ावा देने का आरोप लगाया गया है। वहीं, इस पूरे मुद्दे पर अब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का बयान भी सामने आ गया है। आइए जानते हैं कि सीएम फडणवीस ने क्या कहा है।

यूट्यूबर रणवीर अल्लाहबादिया की विवादित टिप्पणी पर महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा- ÷मुझे इसके बारे में पता चला है। मैंने अब तक इसे देखा नहीं है। चीजों को गलत तरीके से कहा और पेश किया गया है।÷ देवेंद्र फडणवीस ने आगे कहा- ÷हर किसी को बोलने की आजादी है लेकिन हमारी आजादी तब खत्म हो जाती है जब हम दूसरों की आजादी का हनन करते हैं। हमारे समाज में हमने कुछ नियम बनाए हैं, अगर कोई उनका उल्लंघन करता है तो यह बिल्कुल गलत है और उनके खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए।÷

दूसरी ओर इस पूरे विवाद पर शिवसेना ने भी यूट्यूबर रणवीर अल्लाहबादिया को चेतावनी दी है। शिवसेना नेता राजू वाघमारे ने कहा- ÷शिवसेना इस यूट्यूबर को चेतावनी देना चाहती है कि हमारी मां-बहनों का ऐसा अपमान नहीं किया जाना चाहिए। उन्हें अभिव्यक्ति की आजादी का गलत फायदा नहीं उठाना चाहिए। अगर वह नहीं मानेंगे तो हम उनका शो बंद करने की कोशिश करेंगे और कानूनी तौर पर उन्हें दोबारा ऐसे बयान देने से रोकने की भी कोशिश करेंगे।÷

दिल्ली के मुसलमानों के लिए चिंता की बात

भाजपा की जीत पर कांग्रेस नेता का बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने शानदार जीत हासिल करते हुए आम आदमी पार्टी को सत्ता से बाहर कर दिया है। बता दें कि करीब 27 साल बाद भाजपा को दिल्ली में विधानसभा चुनाव में जीत हासिल हुई है। कांग्रेस का इस चुनाव में प्रदर्शन निराशाजनक रहा है। हालांकि, कांग्रेस नेता राशिद अल्वी ने दिल्ली में भाजपा की जीत को लेकर विवादित बयान दिया है। राशिद अल्वी ने दिल्ली के चुनाव परिणाम को दिल्ली के मुसलमानों के लिए चिंता की बात बताया है। दिल्ली विधानसभा चुनाव के नतीजों और भारतीय जनता पार्टी की जीत पर कांग्रेस नेता राशिद अल्वी ने कहा- ÷अगर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने दिल्ली चुनाव साथ मिलकर लड़ा होता तो भाजपा जीत नहीं पाती। कांग्रेस हाईकमान को तय करना है कि हमें अपने सहयोगियों के साथ जाना है या अकेले चुनाव लड़ना है।

राशिद अल्वी ने कहा- ÷दिल्ली में जो कुछ हुआ है, वह दिल्ली के मुसलमानों के लिए चिंता की बात है। दिल्ली के इस चुनाव ने

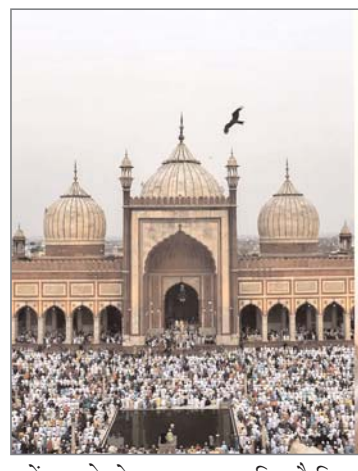

उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि भाजपा हमारी (कांग्रेस) वजह से चुनाव जीती है। अगर हमें भाजपा को हराना है तो हमें ढ्ढह्लष्ठढ्ढ गठबंधन में शामिल सभी दलों का सम्मान करना होगा और गठबंधन को मजबूत करना होगा।÷

दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा ने बहुमत हासिल किया है। वहीं, 10 साल बाद आम आदमी पार्टी की सत्ता से विदाई हो गई है। चुनाव में भाजपा को दिल्ली की 70 में से 48 विधानसभा सीटों पर जीत हासिल हुई है। वहीं, आम आदमी पार्टी केवल 22 सीटों पर सिमट कर रह गई है। वहीं, कांग्रेस को लगातार तीसरी बार दिल्ली विधानसभा चुनाव में एक भी सीट हासिल नहीं हुई।

दिल्ली में कांग्रेस की जीरो की हैट्रिक से निराश पार्टी नेता

तारिक अनवर ने पार्टी की राजनीतिक दिशा को लेकर अहम टिप्पणियां की

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव के नतीजे के बाद कांग्रेस की स्थिति को लेकर पार्टी के नेता सवाल उठाने लगे हैं। कांग्रेस की निराशाजनक हार के बाद वरिष्ठ पार्टी नेता तारिक अनवर ने पार्टी की स्थिति पर गंभीर सवाल उठाए हैं। शनिवार को चुनाव नतीजे के बाद कांग्रेस ने लगातार तीसरी बार विधानसभा चुनाव में एक भी सीट नहीं जीत पाई। पार्टी का प्रदर्शन पिछले चुनावों की तरह इस बार भी बहुत खराब रहा, हालांकि, पार्टी के वोट प्रतिशत में दो फीसदी का मामूली सुधार जरूर हुआ है।

इस हार के बाद तारिक अनवर ने पार्टी की राजनीतिक दिशा को लेकर अहम टिप्पणियां की हैं। कटिहार से कांग्रेस के सांसद तारिक अनवर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, ÷कांग्रेस को अपनी राजनीतिक रणनीति को स्पष्ट करने की जरूरत है। उसे यह तय करना होगा कि वह गठबंधन की

राजनीति करेगी या अकेले चलेगी।÷ पूर्व कांग्रेस महासचिव अनवर ने कहा, ''साथ ही, पार्टी के संगठन में आमूलचूल परिवर्तन करना भी जरूरी हो गया है।''

दिल्ली विधानसभा चुनाव के परिणाम की शनिवार को घोषणा हुई। इस बार भी कांग्रेस विधानसभा चुनाव में एक भी सीट जीत नहीं पाई। विधानसभा चुनाव में पार्टी का प्रदर्शन लगातार तीसरी बार खराब रहा। कांग्रेस के लिए एकमात्र सांत्वना यह है कि दिल्ली में उसके मत प्रतिशत में मात्र दो फीसद का मामूली सुधार हुआ है। कांग्रेस को अब बिहार विधानसभा चुनाव के लिए कमर कसनी है, जो कुछ ही महीनों में होने हैं। पार्टी बिहार में राष्ट्रीय जनता दल के साथ गठबंधन में है।

वहीं, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राशिद अल्वी ने भी दिल्ली में बीजेपी की जीत के लिए अपनी ही पार्टी पर ठीकरा फोड़ा है। उनका कहना है कि यदि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने गठबंधन में यह चुनाव लड़ा होता तो नतीजा ऐसा नहीं होता। अल्वी ने कांग्रेस हाईकमान को सहयोगियों के सम्मान की नसीहत देते हुए यह भी कहा कि बीजेपी की जीत से मुसलमानों के बीच काफी चिंता है।

बंद नहीं है प्रयागराज जंक्शन, महाकुंभ क्षेत्र के 8 स्टेशनों पर भी दौड़ रही हैं ट्रेनें, रेल मंत्री ने बताया

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ को लेकर प्रयागराज में श्रद्धालुओं का हुजूम उमड़ पड़ा है और भीड़ कम नहीं हो रही है। माघी पूर्णिमा के विशेष स्नान को लेकर लोग संगम में डुबकी लगाने के लिए घरों से निकल चुके हैं। लेकिन प्रयागराज पहुंचने के कई रास्तों में लंबा ट्रैफिक जाम लगा हुआ है, जिससे लोगों को काफी कठिनाई हो रही है। देशभर से लोग बस, ट्रेन और निजी वाहनों से महाकुंभ में पवित्र स्नान करने के लिए आ रहे हैंऐसे में एक खबर से लोगों की परेशानी और बढ़ गई है कि प्रयागराज जंक्शन को बंद कर दिया गया है। हालांकि इसे लेकर रेलवे प्रशासन की ओर एक सूचना भी जारी की गई है, जिसमें कहा गया है कि यह प्रचारित किया जा रहा है कि प्रयागराज जंक्शन को बंद कर दिया गया है।

इस मामले में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने खुद बताया कि, ÷प्रयागराज महाकुंभ के लिए 8 रेलवे स्टेशनों पर सभी व्यवस्थाओं का ध्यान रखा जा रहा है। राज्य प्रशासन एक साथ मिलकर सब कुछ बहुत ही समन्वित तरीके से संभाल रहा है। रविवार को प्रयागराज जंक्शन से 330 ट्रेनें रवाना हुई और आज भी ट्रेनें व्यवस्थित तरीके से चल रही हैं। अगर कोई अफवाह फैलाने की कोशिश कर रहा है, तो हमें उनकी बात नहीं सुननी चाहिए, यहां सब कुछ बेहतर तरीके से चल रहा है।÷

'कुछ दिनों तक प्रयागराज जाने से बचें' एमपी के सीएम की अपील

भोपाल (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में भव्य महाकुंभ का आयोजन किया गया है। 44 करोड़ से अधिक श्रद्धालु महाकुंभ में स्नान कर चुके हैं। वहीं अभी भी प्रयागराज जाने वाले

● भीड़भाड़ के कारण महाकुंभ की व्यवस्थाओं में चुनौतियां

श्रद्धालुओं का ताता लगा हुआ है। इस बीच प्रयागराज की तरफ जाने वाले सभी रास्तों पर भीषण जाम देखने को मिल रहा है। वहीं मध्य प्रदेश के कई जिलों में भारी ट्रैफिक जाम के बीच, मुख्यमंत्री मोहन यादव ने श्रद्धालुओं से अगले कुछ दिन तक प्रयागराज की ओर न जाने का आग्रह किया है। दरअसल, पिछले कुछ दिनों में, जबलपुर, सिवनी, कटनी, मैहर, सतना और रीवा जिलों में भारी ट्रैफिक जाम देखा गया है। बड़ी संख्या में लोग वाहनों से महाकुंभ के लिए प्रयागराज की ओर जा रहे हैं। सीएम मोहन यादव ने कहा, ''प्रयागराज से सटे राज्य के इलाकों, खासकर रीवा जिले के आसपास में यातायात का दबाव है, क्योंकि दूसरे राज्यों से लोग भी इसी रास्ते यात्रा कर रहे हैं। मैं सभी से अनुरोध करता हूं कि अगले कुछ दिन इस सड़क पर आगे न बढ़ें।''

सीएम मोहन यादव ने कहा कि भीड़भाड़ के कारण महाकुंभ की व्यवस्थाओं में चुनौतियां हैं और राज्य सरकार प्रयागराज प्रशासन के संपर्क में है। मुख्यमंत्री ने कहा, ''हम सौभाग्यशाली हैं कि महाकुंभ के लिए प्रयागराज जाने वाले इतने श्रद्धालु यहां पहुंच रहे हैं, लेकिन साथ ही हम उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य की व्यवस्था के बारे में भी चिंतित हैं।'' उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने इन सभी मार्गों पर तीर्थयात्रियों के लिए भोजन, पानी और अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की हैं और सामाजिक संगठन भी इस काम में लगे हुए हैं।

सीएम ने कहा, ''मैं सभी से विनम्र निवेदन करता हूं। गूगल पर जांच करें। अगर रास्ता साफ है, तभी आगे बढ़ें। अगर रास्ते में कोई व्यवधान हो तो किसी उपयुक्त स्थान पर रुकें और इंतजार करें।'' बता दें कि सोशल मीडिया पर कई वीडियो सामने आए हैं, जिसमें रीवा जिले की अंतरराज्यीय सीमा सहित कई जिलों में भारी यातायात जाम दिखाई दे रहा है।

44 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने किया स्नान

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी से शुरू हुआ महाकुंभ 26 फरवरी को महाशिवरात्रि तक जारी रहेगा। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 9 फरवरी तक 44 करोड़ से अधिक श्रद्धालु त्रिवेणी संगम में डुबकी लगा चुके हैं। अकेले सोमवार यानी 10 फरवरी को को सुबह 10 बजे तक 63 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया।

सहायक प्राध्यापक बनीं प्रियंका दांगी का स्वागत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा सहायक प्राध्यापक (गृह विज्ञान) के पद पर चयनित होने के बाद प्रियंका दांगी का भोपाल के प्राइवेट बिजली नगर कॉलोनी में स्वागत किया गया। माधव सिंह दांगी की पुत्री प्रियंका के सम्मान में कॉलोनी के दुर्गा मंदिर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में गायत्री परिवार की ओर से रमेश नागर ने प्रियंका को गायत्री मंत्र की पट्टिका पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर प्रियंका ने अपने साक्षात्कार के अनुभव साझा किए और उपस्थित लोगों को भारतीय संस्कृति के 16 संस्कारों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक के संस्कारों के महत्व और दार्शनिक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

समारोह में कॉलोनी के अध्यक्ष बीएस राजपूत, दांगी परिवार के सदस्य और अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। कॉलोनी वासियों ने अपनी बिटिया की इस उपलब्धि पर गर्व व्यक्त किया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

जाटव समाज संभागीय समिति के चुनाव संपन्न

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के संत कबीरदास मंदिर छाप मुगलिया में आज जाटव समाज संभागीय समिति के चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुए। समिति के नए संभागीय अध्यक्ष के रूप में नवीन जाटव को निर्विरोध चुना गया। चुनाव प्रक्रिया में नवनियुक्त अध्यक्ष जाटव की सहमति से लक्ष्मीनारायण जाटव को उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपी गई।

नवनियुक्त अध्यक्ष ने पद संभालते हुए समाज के सभी वर्गों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने जाटव समाज को नई दिशा में ले जाने का संकल्प लिया और समाज की प्रगति के लिए कार्य करने की प्रतिज्ञा ली। यह चुनाव 9 फरवरी 2025 को आयोजित किया गया, जिसमें समाज के प्रबुद्ध सदस्यों की उपस्थिति रही। नए नेतृत्व से समाज में नई ऊर्जा का संचार होने की उम्मीद जताई जा रही है। समिति के माध्यम से समाज के विकास और कल्याण के लिए विभिन्न कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने की योजना है।

परशुराम मंदिर भोपाल में सुंदरकांड पाठ, 23 भक्तों का सम्मान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के शिवाजी नगर स्थित श्री परशुराम मंदिर में छींद वाले हनुमान जी के दरबार में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रत्येक माह के दूसरे शनिवार को आयोजित होने वाली %एक शाम छींद वाले दादा जी के नाम% श्रृंखला के अंतर्गत 8 फरवरी 2025 को 20वां सुंदरकांड पाठ संपन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री सुंदरकांड पारिवारिक मंडल द्वारा 23 सनातन प्रेमियों को सम्मानित किया गया। ये सभी वे श्रद्धालु थे जिनके फरवरी माह में जन्मदिन या विवाह की वर्षगांठ आती है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अनिल भार्गव (वायु) ने बताया कि पिछले 20 पाठों में मंडल 701 महानुभावों को सम्मानित कर चुका है। कार्यक्रम में रमेश शर्मा, बच्चन आचार्य, अमित चतुर्वेदी, हेमंत शर्मा, डॉ. जे.पी. पालीवाल सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। मातृशक्तियों में देवमणि चतुर्वेदी, स्वाति भार्गव, सरोज भार्गव, रानी ठाकुर, रुचि भार्गव समेत अन्य महिलाएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के दौरान हजारी लगाने के साथ-साथ हल्दी कुमकुम का भव्य आयोजन भी किया गया, जिसने समारोह की शोभा को और बढ़ा दिया।

एमबीए की परीक्षा में मार्किंग का मैनेजमेंट गड़बड़ाया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी (बीयू) की ओर से आयोजित एमबीए परीक्षा में मार्किंग का मैनेजमेंट गड़बड़ा गया है। दरअसल, 7 फरवरी को एमबीए के थर्ड सेमेस्टर के रेगुलर और एटीकेटी प्राप्त स्टूडेंट्स की वर्किंग कैपिटल मैनेजमेंट विषय की परीक्षा हुई।

प्रश्न पत्र में कुल अंक (पूर्णांक) 80 लिखा था, पेपर में 13 प्रश्न आए और सभी को हल करने के निर्देश दिए गए। लेकिन इनमें प्रश्न हल करने के लिए च्वॉइस नहीं दी गई। यानी 13-8 के हिसाब से प्रश्न पत्र 104 अंक का हो गया। यही नहीं, प्रश्न पत्र के सेक्शन ए में 8 प्रश्न थे और साइड में लिखा था- 4-8-32 अंक। सेक्शन बी में 5 प्रश्न थे और लिखा था 57-35 अंक। इस हिसाब से देखें तो कुल अंक 67 ही हुए।

इसको लेकर परीक्षार्थियों में असमंजस है कि परीक्षा 80 अंक के लिए हुई, 104 अंक के लिए या 67 अंक के लिए। उन्होंने विवि प्रशासन से इसकी शिकायत भी की है। इधर, रजिस्ट्रार डॉ. आइके मंसूरी ने बताया कि इस प्रकरण को रिजल्ट कमेटी के समक्ष रखकर छात्रहित में निर्णय लिया जाएगा।

सब्जेक्ट एक्सपर्ट बताते हैं कि पेपर के कुल अंक 80 होते हैं। पहले सेक्शन में 8 प्रश्न दिए जाते हैं। इनमें से 4 प्रश्न हल कराए जाते हैं। हर एक प्रश्न 8-8 अंक का होता है। दूसरे सेक्शन में 5 प्रश्न दिए जाते हैं। इसमें से 3 प्रश्न हल कराए जाते हैं। हर एक प्रश्न 16-16 अंक का होता है।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर के आह्वान पर स्वच्छ, हरे-भरे और नशा मुक्त ग्वालियर के लिए दौड़े शहरवासी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ग्वालियर को स्वच्छ, हरा-भरा और नशा मुक्त बनाने के लिए ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर की पहल पर शुरु किए गए अभियान के तहत रविवार सुबह कांच मिल से पाताली हनुमान तक मिनी मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर के साथ जन-प्रतिनिधि सहित बड़ी संख्या में स्कूली छात्र-छात्राएं, वरिष्ठजन और विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने इस मिनी मैराथन दौड़ में सहभागिता की। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने कहा कि हम सभी ने एक सच्ची भावना के साथ बीते एक माह पूर्व यह संकल्प लिया था कि ग्वालियर को स्वच्छ, हरा-भरा, प्रदूषण मुक्त और नशा मुक्त बनाने का अभियान चलाएंगे। इसी अभियान के तहत बीते माह से प्रतिदिन सीताराम धुन का वाचन निरंतर किया जा है। इसी कड़ी में हर माह सुन्दरकाण्ड और 200 से 1000 मीटर की मिनी मैराथन दौड़ का आयोजन करने का भी हम सभी ने संकल्प लिया है। ऊर्जा मंत्री ने शपथ दिलाई कि हम प्रतिदिन अपनी दैनिक दिनचर्या में से कुछ समय निकालकर ग्वालियर को स्वच्छ, हरा-भरा, प्रदूषण मुक्त और नशा मुक्त बनाने के अभियान के लिए खुद समय देंगे और अपने आसपास रहने वाले लोगों को भी इस अभियान से जुड़ने और साफ-सफाई रखने के लिए प्रेरित करेंगे।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने उपस्थित लोगों का आवाह्न किया कि वे एक अच्छे समाज का निर्माण करें। जैसे हम अपने परिवार के दायित्वों का निर्वहन करते हैं, वैसे ही हम अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करें। अपने घर परिवार बेटे बेटियों मित्र मंडली को संस्कारवान बनाएंगे, तभी हम संस्कारवान समाज का निर्माण कर सकेंगे।

नशे के खिलाफ सिंधी समाज की बड़ी मुहिम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के लैंडमार्क गार्डन में सिंधी सेंट्रल पंचायत द्वारा नशे के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष किशोर तनवानी और महासचिव हरीश नागदेव सहित बड़ी संख्या में युवा, महिलाएं और समाजसेवी उपस्थित रहे। डॉ. रश्मि निचलानी ने बिगड़ती लाइफस्टाइल और नशे से होने वाले कैंसर व लकवा जैसी गंभीर बीमारियों के बारे में जानकारी दी। डॉ. राकेश सुखेजा ने सोशल मीडिया और विभिन्न प्रकार की लतों के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने क्रिकेटर विनोद कांबली और अभिनेता संजय दत्त के उदाहरणों से नशे के विनाशकारी प्रभावों को समझाया।

युवा इन्फ्लुएंसर अनिशा चिमनानी ने बताया कि वह 100 से अधिक लोगों को नशे की लत से मुक्त करा चुकी हैं। दीपक राजानी ने नशे के कारण युवाओं में बढ़ती नपुंसकता की समस्या पर चिंता व्यक्त की। विधायक भगवानदास सबनानी ने कॉकटेल पार्टी की संस्कृति पर चिंता जताते हुए भोपाल में हुक्का बार को तत्काल बंद करने की मांग को मुख्यमंत्री तक पहुंचाने का आश्वासन दिया। पंचायत के मुख्य सलाहकार और विधानसभा के पूर्व प्रमुख सचिव भगवानदेव ईसरानी ने समाज से नशा-मुक्ति अभियान में सक्रिय सहयोग की अपील की। कार्यक्रम में लखन दादलानी द्वारा डॉक्यूमेंट्री प्रदर्शित की गई, जबकि दिनेश मेंघानी, बलदेव खेमानी, मोहन लालवानी, लता बजाज और हरीश ज्ञानचंदानी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का समापन नरेश गिदवानी की टीम द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ हुआ

स्कूटी-लैपटॉप, सबके लिए इंतजार, विद्यार्थियों के लिए 5 योजनाएं, पर किसी का लाभ वक्त पर नहीं

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मप्र के करीब 92 हजार सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत लगभग 94 लाख विद्यार्थियों के लिए पांच निःशुल्क योजनाएं संचालित की जा रही है। इनमें मुख्यमंत्री स्कूटी योजना, लैपटॉप प्रोत्साहन योजना, निःशुल्क यूनिफार्म वितरण, निःशुल्क पुस्तक वितरण और निःशुल्क साइकिल वितरण शामिल है। लेकिन इनमें से एक का भी लाभ विद्यार्थियों को समय पर मिल पा रहा हो।

वर्ष 2023-24 के सत्र में स्कूटी के लिए पात्र विद्यार्थियों को अब जाकर स्कूटी मिलना शुरू हुई है। लेकिन इसी सत्र में लैपटॉप के लिए इंतजार करना पड़ रहा है। इसके अलावा जो विद्यार्थी साइकिल योजना के लिए पात्र थे, उन्हें भी जनवरी माह में बीते शैक्षणिक सत्र की साइकिल मिल पाई हैं।

यूनिफॉर्म भी अभी मिली है। किताबें जरूर जुलाई 2024 में मिल गई थी, लेकिन शैक्षणिक सत्र की शुरूआत अप्रैल माह में हो जाती है। इस देरी को लेकर जिम्मेदारों से बात करनी चाही तो किसी ने भी जवाब नहीं दिया।

मप्र भाजपा के कॉल सेंटर ने दिल्ली में किए 4.50 लाख कॉल, वोटरों को जोड़ा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत में मप्र भाजपा की बड़ी भूमिका रही। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी दिल्ली की 12 सीटों पर चुनाव प्रचार की कमान संभाली। इनमें से 11 सीटों पर भाजपा की जीत हुई। सिर्फ एक सीट पर आप के खाते में गई। मप्र भाजपा मुख्यालय से संचालित कॉल सेंटर से पिछले डेढ़ महीने में लगभग साढ़े चार लाख कॉल दिल्ली के वोटर्स को किए गए।

30 टेलीकॉलर रोज औसत 10 हजार कॉल करते थे। 30 सेकंड से एक-डेढ़ मिनट तक वोटर्स से चर्चा होती थी। कॉल सेंटर में बैठने वाले टेलीकॉलर का काम था, इन वोटर्स से बात करना और उन्हें भाजपा के पक्ष में मोड़ना। लगभग डेढ़ लाख वोटर्स को रिपीट कॉल किए गए। ये वोटर्स विभिन्न समाज, जाति, धर्म और समूहों के प्रतिनिधि थे। बता दें कि इसके पहले मप्र विधानसभा चुनाव में टेलीकॉलर की टीम ने जबरदस्त काम किया था। यहां प्रत्येक समाज के हर विधानसभा से 25 नंबर जुटाकर इन्हें दिए गए थे। चुनाव के बाद समीक्षा में पाया गया कि कॉलिंग के दौरान सही संवाद होने से वोटर का मन बदला है। इसकी शुरुआत 2018 के चुनाव से हुई थी। यह टीम सीधे दिल्ली की आईटी टीम से जुड़ी है। वहां से इनकी निगरानी होती है। दिल्ली में मप्र भाजपा की तरफ से 30 विस्तारक भेजे गए थे। इस दौरान इन्होंने मप्र के बूथ प्रबंधन को दिल्ली के कार्यकर्ताओं के साथ साझा किया और डोर टू डोर संपर्क बढ़ाया। मप्र भाजपा के पदाधिकारी बताते हैं कि देशभर में मप्र भाजपा का बूथ प्रबंधन सबसे अच्छा माना जाता है। मप्र में 90 से 100 फीसदी परिणाम देने वाले 100 बूथ के कार्यकर्ता भी दिल्ली गए थे। मप्र भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा समेत दूसरे नेताओं ने भी कई सीटों पर प्रचार की कमान संभाली।

दिल्ली में जीत के बाद भाजपा मुख्यालय में जमकर जश्न मना। यहां प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, संगठन महामंत्री हितानंद, विधायक रामेश्वर शर्मा, विधायक भगवान दास सबनानी और भाजपा प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल की मौजूदगी में सैकडों कार्यकर्ताओं ने एकदूसरे को मिठाई खिलाई, पटाखे फोड़े।

सीएम डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में जश्न मनाया। कहा कि दिल्ली आपदा से मुक्त हो गई।

कैंसर जागरूकता सप्ताह में विशेषज्ञों ने दी चेतावनी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के एम.के. पोंडा कॉलेज ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट में विश्व कैंसर दिवस के मौके पर आयोजित कैंसर जागरूकता सप्ताह का समापन कृष्णा कैंसर अस्पताल और भोपाल कैंसर रिसर्च एंड वेलफेयर एसोसिएशन के सहयोग से किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती को पुष्प अर्पण और दीप प्रज्वलन से हुई। मुख्य अतिथि डॉ. कृष्णा कटेवा ने कैंसर के कारणों पर चिंता जताते हुए बताया कि तंबाकू में 70 से अधिक हानिकारक तत्व मौजूद हैं, जो कैंसर का प्रमुख कारण बनते हैं। उन्होंने युवतियों को विशेष चेतावनी देते हुए कहा कि शराब का सेवन करने वाली लड़कियों की आने वाली पीढ़ियां कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से प्रभावित हो सकती हैं। कैंसर एसोसिएशन के चेयरमैन मनोज चतुर्वेदी ने स्वस्थ जीवनशैली पर जोर देते हुए विद्यार्थियों को ध्यान और योग अपनाने की सलाह दी। कॉलेज की प्राचार्य डॉ. कल्पना टेवरे ने छात्रों को फास्ट फूड से दूर रहने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया।

'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' योग तपस्या कार्यक म का शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के तत्वावधान में ब्लेसिंग हाउस, भोपाल में स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन विषय पर दो दिवसीय योग तपस्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ राजयोग विशेषज्ञ बी.के. राजू भाई जी ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में मन की शक्तियों को बढ़ाने और आध्यात्मिक उन्नति के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, अपने मन की शक्ति को सशक्त करना बहुत जरूरी है, क्योंकि कमजोर मन से गलत निर्णय होते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में 14 लाख से अधिक परिवारों ने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया है और यह ज्ञान पूरी दुनिया में भगवान को प्रत्यक्ष करने में सहायक साबित हो रहा है।

बी.के. राजू भाई जी ने आगे कहा कि हमें जीवन में किसी भी परिस्थिति में उलझने की बजाय अपनी शक्ति को पहचानना चाहिए और आत्मा को शुद्ध रखना चाहिए। उन्होंने आलस्य को योगियों का सबसे बड़ा शत्रु बताते हुए आत्म सेवा और ध्यान के माध्यम से वरदान प्राप्त करने की बात कही।

इस अवसर पर ब्लेसिंग हाउस के राजयोगी बी.के. रावेन्द्र भाई ने राजू भाई जी का स्वागत किया, वहीं कुमारी श्री और कुमारी आराधना ने नृत्य प्रस्तुत कर कार्यक्रम को और भी रंगीन बना दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन बी.के. राहुल भाई ने किया। ब्लेसिंग हाउस की निदेशिका बी.के. डॉ. रीना दीदी ने उपस्थित सभी का स्वागत किया और कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन दीप प्रज्वलन के साथ किया। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के कई सेवाकेंद्रों की प्रभारी दीदियाँ और सैकड़ों भाई-बहन उपस्थित रहे।

बी.के. राजू भाई जी ने दो दिवसीय प्रवास के दौरान 8 और 9 फरवरी 2025 को नर्मदापुरम रोड स्थित ब्लेसिंग हाउस में आयोजित कार्यक्रम में योग तपस्या के विभिन्न पहलुओं पर प्रवचन देंगे।

इंटीग्रेटेड टाउनशिप पॉलिसी : 60 दिन में प्रोजेक्ट होंगे मंजूर, ईडब्ल्यूएस की तरह एलआईजी की स्टांप ड्यूटी पर छूट

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। व्यवस्थित शहरीकरण और प्रदूषण रहित कंपनियों को नगरीय क्षेत्रों में जगह देने के लिए इंटीग्रेटेड टाउनशिप पॉलिसी तैयार हो गई है। मुख्य सचिव अनुराग जैन के सामने इस पॉलिसी का प्रेजेंटेशन हुआ। कुछ बड़े सुधारों के साथ पॉलिसी को हरी झंडी मिल गई। इसे 11 फरवरी को होने वाली कैबिनेट में रखा जाएगा। इस पॉलिसी के आने के बाद डेवलपर पर लगाम लगेगी। ईडब्ल्यूएस की तरह एलआईजी के स्टांप शुल्क पर छूट रहेगी। शहरों में नए व्यावसायिक क्षेत्र, वर्क प्लेस, वर्किंग वूमन हॉस्टल बन सकेंगे। सबसे बड़ी बात- प्रोजेक्ट के लिए शासन के स्तर की तमाम मंजूरियां 60 दिन में (रेरा छोड़कर) मिलेंगी।

ग्लोबल इन्वेस्टर समिट को देखते हुए पहली बार आ रही यह पॉलिसी शहरों को नई दिशा देगी। नगरीय विकास विभाग ने ड्राफ्ट ऐसे तैयार किया है, जिससे छोटे निवेशकों को भी मौका मिल सके। बड़े प्रोजेक्ट के लिए यदि एक व्यक्ति के पास जमीन नहीं है तो एक से अधिक लोग कंसोर्टियम बनाकर काम कर सकेंगे। यह व्यवस्था सभी पर लागू होगी। प्रोजेक्ट की गंभीरता का आकलन और मंजूरी का काम नगरीय विकास विभाग के प्रमुख सचिव की अध्यक्षता में गठित कमेटी करेगी। निवेश को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने इंसेंटिव का भी प्रावधान रखा है। यह अतिरिक्त एफएआर के रूप में होगा। अभी जमीन खरीदने, रजिस्ट्री और डेवलपमेंट में काफी पैसा खर्च होता था। लोग निवेश नहीं करते थे। नई पॉलिसी में चीजें आसान होंगी।

1. आवासीय प्रोजेक्ट में प्रावधान के मुताबिक ईडब्ल्यूएस-एलआईजी बनाना होगा। बिल्डर आश्रय शुल्क चुकाकर अब इससे बच नहीं पाएंगे। ईडब्ल्यूएस-एलआईजी बनाने पर अतिरिक्त ग्लोबल एफएआर बतौर इंसेंटिव मिलेगा।

2. बिजली के लिए सोलर एनर्जी का उपयोग करते हैं और प्लांटेशन कर ग्रीन एरिया प्रोजेक्ट में बढ़ाते हैं तो भी इंसेंटिव में ग्लोबल एफएआर का फायदा मिलेगा। यह खाते की तरह उपयोग होगा। जब जितना चाहें इस्तेमाल करें।

3. जिस तरह ईडब्ल्यूएस में स्टांप ड्यूटी की छूट रहती है, वही छूट एलआईजी पर भी दी जाएगी। किसी भी प्रोजेक्ट में अतिरिक्त एफएआर खरीदा भी जा सकता है।

सीधी जिले की 2 लाख से अधिक महिलाओं के खाते में 25 करोड़ 89 लाख से अधिक की राशि डाली गई

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के देवास में आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम में प्रदेश की 1.27 करोड़ लाड़ली बहनों को रूपये 1553 करोड़ की राशि सिंगल क्लिक के माध्यम से उनके बैंक खातों में अंतरित की गई। मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजनान्तर्गत प्रदेश के 81 लाख से अधिक किसानो को 1624 करोड़ की राशि का अंतरण किया गया। साथ ही मुख्यमंत्री ने सिंगल क्लिक से 56 लाख से अधिक सामाजिक सुरक्षा पेंशन के हितग्राहियों को 337.42 करोड़ रुपए की राशि भी जारी की। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के अन्तर्गत सीधी जिले की 02 लाख 10 हजार 966 पात्र महिलाओं के खाते में प्रति महिला एक हजार 250 रूपये के मान से 25 करोड़ 89 लाख 03 हजार 300 रूपये की राशि अंतरित की गई। कलेक्टर कार्यालय के एनआईसी कक्ष से प्रभारी परियोजना अधिकारी महिला बाल विकास सीधी क्रमांक 1 आशा तिवारी, मुख्यमंत्री किसान कल्याण, सामाजिक सुरक्षा पेंशन के हितग्राही तथा लाड़ली बहनों द्वारा सहभागिता की गई।

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना अंतर्गत जिले में 02 लाख 10 हजार 966 पात्र हितग्राहियों के खाते में राशि अंतरित की गई हैं। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के अन्तर्गत जनपद पंचायत कुसमी में 17 हजार 528 महिलाओं, जनपद पंचायत मझौली में 29 हजार 390, जनपद पंचायत रामपुर नैकिन में 44 हजार 395, जनपद पंचायत सीधी में 54 हजार 883 तथा जनपद पंचायत सिहावल में 51 हजार 838 महिलाओं के खाते में 1250 रूपये के मान से राशि अंतरित की गई। कार्यक्रम में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के साथ ही नगरीय क्षेत्र की महिलाओं को भी लाभांवित किया गया। इसमें नगर पालिक सीधी में 06 हजार 220, नगर परिषद चुरहट में 02 हजार 447, नगर परिषद मझौली में 02 हजार 106 तथा नगर परिषद रामपुर नैकिन में 02 हजार 159 महिलाओं के खाते में 1250 रूपये प्रत्येक महिला के मान से राशि अंतरित की गई।

सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना अंतर्गत जिले के 107162 पात्र हितग्राहियों के खाते में राशि अंतरित की गई: राज्यस्तरीय कार्यक्रम में सीधी जिले के 01 लाख 07 हजार 162 पात्र हितग्राहियों के खाते में 06 करोड़ 42 लाख 97 हजार 200 रूपये की राशि अंतरित की गई। जनपद पंचायत कुसमी के 7260, मझौली के 13622, रामपुर नैकिन के 22435, सीधी के 28514 एवं सिहावल के 29278 पात्र हितग्राहियों को 600 प्रति हितग्राही के मान से राशि अंतरित की गई। इसी प्रकार नगरीय निकाय अंतर्गत सीधी के 2523, मझौली के 1178, चुरहट के 1274 एवं रामपुर नैकिन के 1078 पात्र हितग्राहियों के खाते मे राशि अंतरित की गई। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धा पेंशन योजना के 55957, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन योजना के 12123, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय निःशक्तजन योजना के 2278, मुख्यमंत्री कन्या अभिभावक पेंशन योजना के 711, मंदबुद्धि/वहुविकलांग को आर्थिक सहायता योजना के 1657, सामाजिक सुरक्षा पेंशन वृद्धा योजना के 9066, सामाजिक सुरक्षा पेंशन परित्यक्ता पेंशन योजना के 291, सामाजिक सुरक्षा पेंशन निःशक्त पेंशन योजना के 7439, दिव्यांग शिक्षा प्रोत्साहन सहायता राशि के 2383, सामाजिक सुरक्षा पेंशन कल्याणी पेंशन योजना के 15244 एवं मुख्यमंत्री अविवाहिता पेंशन योजना के 13 हितग्राहियों के खाते में 600 रूपये के मान से राशि अंतरित की गई।

पन्ना-छतरपुर हाईवे पर 2 किमी लंबा जाम

मड़ला घाटी में तीन घंटे से फंसे सैकड़ों वाहन, कुंभ जा रहे श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ी

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। प्रयागराज महाकुंभ में गंगा स्नान के लिए बढ़ती श्रद्धालुओं की भीड़ का असर पन्ना जिले में भी दिखाई दे रहा है। पन्ना-छतरपुर राष्ट्रीय राजमार्ग-39 पर स्थित मड़ला घाटी में सोमवार दोपहर से भीषण जाम की स्थिति बनी हुई है। करीब दो किलोमीटर लंबा यह जाम तीन घंटे से जारी है, जिसमें सैकड़ों वाहन फंसे हुए हैं।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए पुलिस लगातार जाम को खुलवाने का प्रयास कर रही है। जाम में विभिन्न जिलों से आए श्रद्धालुओं की बसें, पर्यटकों की जिप्सियां और अन्य यात्री वाहन शामिल हैं। रविवार को भी इसी मार्ग पर जाम की स्थिति बनी थी, लेकिन वह एक घंटे में ही सुलझ गई थी। हालांकि, सोमवार को वाहनों की संख्या अधिक होने के कारण स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई। पन्ना टाइगर रिजर्व के पास स्थित इस राष्ट्रीय राजमार्ग पर भैरव टेक घाटी में प्रतिदिन जाम की समस्या देखी जा रही है। आमतौर पर 2-3 घंटे तक चलने वाला यह जाम यात्रियों के लिए परेशानी का सबब बन रहा है। प्रशासन से जाम की इस समस्या के स्थायी समाधान की मांग की जा रही है।

हार्डवेयर पेंटस एसो की कार्यकारिणी बैठक सम्पन्न

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। हार्डवेयर पेंटस ऐसो की कार्यकारिणी की बैठक गत दिवस रीवा रोड स्थित ओम प्लाजा में संस्थाध्यक्ष घनश्यामदास अच्छड़ा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में सर्वप्रथम संस्था के उपाध्यक्ष राजेश दासवानी "राजा" के सहयोग से 26 जनवरी को आयोजित पारिवारिक मिलन सम्मान समारोह की समीक्षा की गई तत्पश्चात संस्था की भावी गतिविधियों पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया।

संस्था के महामंत्री विनोद गेलानी ने जानकारी देते हुए बताया बैठक में संस्था कार्यकारिणी सदस्य सुभाष तिवारी जी के सहयोग से तिवारी जी के फार्म हाउस में एक पारिवारिक कार्यक्रम आयोजित करने एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेश बड़ेरिया जी के सहयोग से मूवी देखने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया।

बैठक में मुख्यरूप से अध्यक्ष घनश्यामदास अच्छडा वरिष्ठ उपाध्यक्ष राकेश गुप्ता महामंत्री विनोद गेलानी कोषाध्यक्ष सनी सिरवानी भरत मंघनानी,राजा दासवानी,संतोष अग्रवाल विशाल गेलानी विनोद मंघनानी मोहन गुप्ता राकेश गुप्ता अनिल सचदेव दिनेश अग्रवाल प्रदीप अग्रवाल बलराम अच्छडा रामचंद्र अच्छडा दीपक मंघनानी,राजा माधवानी, राज गुप्ता चिरायु घोघवानी उमेश गुप्ता एवं कई सम्मानीय सदस्यगण प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

पुलिस ने भेष बदलकर 4 अपहरणकर्ताओं को पकड़ा, 3 फरार

गढ़े धन के बहाने अपहरण कर मांगी थी 5.75 लाख की फिरौती, कार-हथियार जब्त

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर पुलिस ने एक व्यक्ति का अपहरण कर फिरौती मांगने के मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया। वहीं तीन आरोपी अभी भी फरार हैं।

एसपी अगम जैन ने बताया कि बमीठा क्षेत्र से मोहम्मद रफीक अहमद (मंजू नगर खजुराहो निवासी) के अपहरण की सूचना मिली थी। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए मुखबिर से मिली सूचना के आधार पर अपहरणकर्ताओं की तलाश शुरू की। आरोपियों ने 5.75 लाख रुपए फिरौती की मांग की थी।

पुलिस ने भेष बदलकर आरोपियों को पकड़ा: बदमाशों ने गढ़े धन निकालने के बहाने रफीक अहमद का अपहरण किया था। पीड़ित की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, परिजनों ने योजनाबद्ध तरीके से फिरौती की राशि अपहरणकर्ताओं तक पहुंचाई। पुलिस ने भेष बदलकर दबिश दी और चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

फरार आरोपियों की तलाश जारी: पकड़े गए आरोपियों में तोरण पटेल उर्फ तरुण, संदीप अहिरवार (दोनों धमना गांव निवासी), शिवराम उर्फ सत्तू कुशवाहा (बसारी गांव निवासी) और अनंत विश्वकर्मा (धमना गांव निवासी) शामिल हैं। आरोपियों से 5.75 लाख रुपए की फिरौती राशि, एक स्विफ्ट डिजायर कार, 315 बोर का कट्टा व कारतूस, 12 बोर का कट्टा व कारतूस, एक एप्पल मोबाइल और चार एंड्राइड मोबाइल फोन बरामद किए गए हैं। पुलिस ने सभी आरोपियों को जेल भेज दिया है और अन्य फरार आरोपियों की तलाश जारी है।

110 टन कोयला लदा डंपर 40 फीट नीचे गिरा

ऑपरेटर के कमर में फ्रैक्चर, सिंगरौली की एनसीएल की अम्लोरी खदान में बड़ा हादसा

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली के नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एनसीएल) की अम्लोरी परियोजना में सोमवार सुबह 7 बजे एक हादसा हुआ। कोयला लदा एक भारी डंपर डंपिंग यार्ड में पलटकर करीब 40 फीट नीचे गिर गया। इस हादसे में डंपर ऑपरेटर अजय कुमार पांडे गंभीर रूप से घायल हो गए।

कोयला उतारते समय बिगड़ा संतुलनः अजय कुमार 110 टन कोयला लेकर डंपिंग एरिया की ओर जा रहे थे। डंपिंग यार्ड पर कोयला उतारते समय डंपर का संतुलन बिगड़ गया और वह पलट गया। हादसे में पायलट केबिन में फंसे अजय को सेफ्टी स्टाफ ने बचाव अभियान चलाकर बाहर निकाला। घायल ऑपरेटर को तुरंत एनसीएल के नेहरू शताब्दी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टरों ने उनके कमर में फ्रैक्चर की पुष्टि की है। अस्पताल प्रबंधन के मुताबिक उनकी स्थिति अब सामान्य है।

एनसीएल के जनसंपर्क अधिकारी रामविजय सिंह ने बताया कि: प्रबंधन ने घटना की जांच के आदेश दे दिए हैं। हादसे के कारणों का पता लगाया जाएगा।

एनसीएल प्रबंधन खदान में सुरक्षा का विशेष ध्यान रखने का दावा करता है, लेकिन लगातार हो रही ऐसी घटनाएं इन दावों की पोल खोल रही हैं। मैनेंजमेंट पर आरोप है कि सुरक्षा प्रशिक्षण और कार्यक्रम सिर्फ कागजों तक सीमित हैं। हादसों के बाद जांच से आगे कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जाती।

कलेक्टर ने रामनगर में श्री राजाधिराज मन्दिर के निर्माण को लेकर की चर्चा

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। कलेक्टर रानी बाटड़, रामनगर रेस्टहाउस पहुँची ,जंहा पर अमरपाटन विधायक डॉ राजेन्द्र कुमार सिंह ,एसडीएम रामनगर, डॉ-आरती सिंह,नायब तहसील दार,रोशन लाल रावत, सीईओ जनपद पंचायत रामनगर मुन्नीलाल प्रजापति ,पूर्व जनपद सदस्य व वरिष्ठ समाजसेवी धर्मेंद्र प्रताप सिंह,ग्राम पंचायत गिधैला के सरपंच कृष्ण प्रताप सिंह/प्रिंस/ के साथ छोटी अयोध्या अंतर्गत बड़े महाराजाधिराज मन्दिर देवराजनगर के नव निर्माण के सम्बन्ध में चर्चा की,गौर तलब है कि देवराजनगर स्थित उक्त मन्दिर का अधूरा नव निर्माण कोर्ट में मुकदमेबाजी के चलते लंबित था,जिसमे गिधैला सरपंच के अथक प्रयासों के चलते विगत दिनों स्टे ब्रेक होने से 27 साल बाद पुनः उक्त मन्दिर के निर्माण की रूपरेखा,कार्य के सम्बन्ध में विधिवत चर्चा करते हुए,आगामी कार्ययोजना के सम्बन्ध में कार्यवाही के बारे में परियोजना पर विचार विमर्श किया गया।

रेत से भरे दो ट्रैक्टर जब्त, चालक फरार

जैतपुर और देवलौंद में कार्रवाई, दोनों वाहन मालिकों समेत ड्राइवर्स पर केस

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले में दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में रेत से भरे दो ट्रैक्टर पकड़े गए हैं। जैतपुर थाना क्षेत्र के बोकरामार और देवलौंद के सुखाड़ गांव से पुलिस ने कार्रवाई की। दोनों ही मामलों में चालक पुलिस को देखकर मौके से फरार हो गए। जैतपुर पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि क्षेत्र में अवैध रेत का परिवहन हो रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस ने बोकरामार में कार्रवाई की, जहां एक ट्रैक्टर रेत से भरा मिला। चालक ने पुलिस को देखते ही ट्रैक्टर सड़क पर छोड़कर भाग निकला। पुलिस ने पीछा किया, लेकिन वह पकड़ में नहीं आया।

ट्रैक्टर छोड़कर भागा चालक: इसी तरह देवलौंद पुलिस ने सुखाड़ गांव से एक और रेत से लदा ट्रैक्टर जब्त किया। पुलिस के अनुसार, रेत माफिया के लोग गांव के रास्तों पर नजर रखते हैं और पुलिस की गतिविधियों की सूचना अवैध खनन करने वालों को पहुंचा देते हैं। इसी कारण पुलिस के पहुंचने से पहले ही चालक और मालिक ट्रैक्टर छोड़कर फरार हो गए।

वाहन मालिकों और ड्राइवर्स पर केस: पुलिस ने दोनों मामलों में ट्रैक्टर चालकों और मालिकों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। जिले में लगातार रेत का अवैध खनन और परिवहन हो रहा है। स्थानीय माफिया प्रतिदिन अलग-अलग स्थानों से रेत की चोरी कर रहे हैं। पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी है।

टीबी मरीजों की पहचान के लिए अभियान

100 दिवसीय निश्चय शिविर में खखार सैंपलिंग बढ़ाने के निर्देश, फूड बास्केट भी मिलेगा

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले में टीबी (क्षय रोग) के नए मरीजों की पहचान और उनके बेहतर इलाज के लिए अभियान चलाया जा रहा है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बिजुरी में आयोजित एक बैठक में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) डॉ. आरके वर्मा ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को दिशा-निर्देश दिए।

राज्य सरकार द्वारा संचालित 100 दिवसीय निश्चय शिविर के तहत टीबी मरीजों की पहचान के लिए खखार सैंपलिंग की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया गया है। साथ ही, चिह्नित मरीजों के सही इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए हैं।

बैठक में सीएमएचओ ने मरीजों को पोषण सहायता के रूप में फूड बास्केट वितरण, एक्स-रे जांच की सुविधा और निक्षय मित्र की नियुक्ति जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की। इस अवसर पर चिकित्सा अधिकारी, गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि, एएनएम, आशा कार्यकर्ता और आशा सहयोगी उपस्थित रहे। यह पहल टीबी मरीजों की समय पर पहचान और उनके समुचित इलाज को सुनिश्चित करने की दिशा में एक अहम कदम है।

अमन त्रिपाठी बने पत्रकार संघ के ब्लॉक अध्यक्ष

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ के प्रांतअध्यक्ष शलभ भदौरिया के मार्गदर्शन में एवं कार्यकारी अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी एवं जिला अध्यक्ष वरुण शर्मा की स्वीकृत से जिला महासचिव मुकेश मिश्रा ने अमन त्रिपाठी को पुनः नागौद ब्लॉक का अध्यक्ष नियुक्त किया है।जिस पर समस्त नगर वासियों एवं नागौद ब्लॉक के समस्त पत्रकारों में हर्ष व्याप्त है। अमन की इस नियुक्ति पर नागौद में संगठन को काफी मजबूती मिलेगी।

शिकायतों का समय-सीमा में गुणवत्तापूर्ण निराकरण सुनिश्चित करें : सीईओ जिला पंचायत

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। समय-सीमा पत्रों की समीक्षा बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज द्वारा सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण की विस्तृत समीक्षा की गई। उन्होंने कहा कि सभी विभाग प्रमुख अपने विभाग से संबंधित शिकायतों की नियमित समीक्षा करेंगे। स्वयं भी शिकायतकर्ताओं से संपर्क करेंगे तथा अधिक से अधिक शिकायतों का संतुष्टि के साथ निराकरण सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने आगामी एक सप्ताह में अभियान चलाकर अधिक से अधिक शिकायतों को संतुष्टि के साथ निराकृत करने के निर्देश दिए हैं। सीईओ जिला पंचायत ने सीएम मोनिट में चिन्हित प्रकरणों को तत्परता से निराकृत करने के निर्देश दिए हैं।

सीईओ जिला पंचायत द्वारा समस्त उपखण्ड अधिकारियों तथा पंचायत विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि जिले में प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत सर्वे का कार्य किया जा रहा है। सर्वे कार्य की सतत निगरानी रखते हुए यह सुनिश्चित करेंगे कि कोई भी पात्र व्यक्ति योजना के लाभ से वंचित नहीं रहे। इस कार्य में उदासीनता या लापरवाही बरतने वाले कर्मचारियों के विरूद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावेगी।

बोर्ड परीक्षाओं में रखें कड़ी निगरानी: अपर कलेक्टर ने कहा कि आगामी समय में जिले में कक्षा 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं के साथ-साथ कक्षा 5वीं और 8वीं की बोर्ड परीक्षाएं सम्पन्न होनी है। सभी बोर्ड परीक्षाओं की सुचिता बनी रहे तथा शांतिपूर्ण ढंग से निर्विघ्न परीक्षाएं सम्पन्न हों। जिले में पेपर लीक या सामूहिक नकल जैसी घटनाएं नहीं हों अपर कलेक्टर ने सभी संबंधित अधिकारियों को बोर्ड परीक्षाओं के दौरान कड़ी निगरानी रखने के निर्देश दिए हैं। इस दौरान प्रायवेट स्कूल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ अजय मिश्रा भी उपस्थित रहें।

अपर कलेक्टर ने कहा कि आगामी रविवार 16 फरवरी को म.प्र. लोक सेवा आयोग की परीक्षा का आयोजन जिला मुख्यालय के विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में किया जायेगा। परीक्षा केन्द्रों के निगरानी के लिए अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। सभी अधिकारी इस आशय का प्रमाण पत्र अवश्य देंगे कि उनके परिवार का कोई भी सदस्य परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो रहा है।

बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, सिहावल एसपी मिश्रा सहित सभी विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

ऐतिहासिक रही ग्राम पंचायत सितलहा में पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह की सभा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, राज्यसभा सांसद कांग्रेस पार्टी के शिखर चोटी के नेता दिग्विजय सिंह की जनसभा ग्राम पंचायत सितलहा के मैदान में सिरमौर क्षेत्र के कांग्रेस नेता चक्रधर सिंह जवा के आयोजकत्व में बहुत भव्यता पूर्ण ढंग से विशाल जनसैलाब की उपस्थिति में 3 बजे दिन सम्पन्न हुई।

बैंड बजा और कन्या पूजन के साथ भव्य माल्यार्पण से स्वागत किए गया। गांधी भवन में गांधी प्रतिमा पर मुख्यातिथि पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह जी ने मालार्पण के दीप प्रज्वलित किए गए। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज देश में यूवा ,किसान,कमजोर वर्ग परेशान है, कांग्रेस ही से पुनर्स्थापित और सबका विकास संभव है।कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कांग्रेस के अध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा ने की।स्वागत भाषण देते हुए कार्यक्रम के आयोजक सिरमौर विधानसभा के कांग्रेस चक्रधर सिंह जवा ने दिग्विजय सिंह जी समय में अधिकार सम्पन्न पंचायती राज, शिक्षा कर्मी भरती एवं युवाओं को काफी संख्या में नौकरी मिली, एक बत्ती कनेक्शन,किसानों के 5 हार्सपावर बिजली माफ,जैसे अनेक उपलब्धियां बताई।कार्यक्रम का संचालन सत्यनारायण चौबे पटियरी,के.पी. सिंह ने किया।

विचार

निर्वासन की पीड़ा से जूझता अंतर्मन

हाथ में हथकड़ी, पांव में बेडिय़ां, आंख में आंसू, चेहरे पर बेबसी यह तस्वीर है अमरीका से डिपोर्ट किए गए अवैध प्रवासी भारतीयों की जो हाल ही में आव्रजन कानूनों को लेकर राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा की गई सख्ती के चलते अमरीकी सैन्य विमान सी-17 के जरिए अमृतसर के श्री गुरु रामदास इंटरनैशनल एयरपोर्ट पर उतारे गए। प्रथम दृष्टया जारी 205 लोगों की सूची में से स्वदेश तक पहुंच बना चुके 104 लोगों के इस पहले दल में 4 वर्षीय बच्चा भी शामिल है। अपनी प्रकार का यह पहला प्रयास नहीं, पूर्व में भी कई अमरीकी राष्ट्रपति इसे अंजाम दे चुके हैं। पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन ने अपने कार्यकाल के दौरान 4 लाख से अधिक अवैध आप्रवासियों को बाहर निकाला था जिनमें कुछ भारतीय भी शामिल रहे। पाश्चात्य देशों के प्रति भारतीयों का खास लगाव जग-जाहिर है। भौतिक सुख-सुविधाओं की ललक कुछ लोगों को इस कदर लुभाती है कि वे बिना विचारे धूर्त एजैंटों के झांसे में आ जाते हैं। बच्चों के बेहतर भविष्य की उम्मीद में अनेक अभिभावक अपनी जमीन-जायदाद, घर-सम्पत्ति दांव पर लगा देते हैं आवश्यकता पडऩे पर कर्जा लेने तक से नहीं चूकते। अधिक कमाने की लालसा सहित विदेश गमन में एक बड़ा कारण देश में आशानुरूप रोजगार मुहैया न होना भी है। येन-केन-प्रकारेण विदेशों तक पहुंच बनाने की चाह एक अंधेरी राह की ओर धकेल देती है, जिसे पंजाबी भाषा में 'डंकी रूट' के तौर पर जाना जाता है। इस गैर-कानूनी प्रवेश को अंजाम देता है देश भर में कुकुरमुत्ते की भांति फैले अवैध ट्रैवल एजैंटों का गठजोड़। इनमें अधिकतर आपराधिक छवि के लोग हैं, जो प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में युवाओं को अवैध तरीके से विदेश भेजकर अपनी तिजोरियां भरते हैं। गुजरात, हरियाणा, पंजाब जैसे समृद्ध प्रांतों में तंत्र की नाक तले जालसाज एजैंटों का धंधा बहुतेरे फल-फूल रहा है। देश भर में अवैध ट्रैवल एजैंटों की ज्ञात संख्या 3,094 है, जोकि 30 अक्तूबर, 2023 तक 2925 थी।

पंजाब विधानसभा में वर्ष 2019 के दौरान पेश किए गए रिकार्ड के अनुसार 17 मार्च, 2017 से 10 अक्तूबर, 2019 तक प्रदेश में अवैध एजैंटों के खिलाफ 2,140 आपराधिक मामले दर्ज किए गए। कानूनी दांव-पेंचों अथवा देश में व्याप्त भ्रष्टतंत्र का सहारा लेकर इनका साफ बच निकलना इस कुचक्र को तोडऩे में सबसे बड़ी रुकावट है। 30-35 लाख से 60-65 लाख तक एजैंटों को दी जानी वाली सामान्य राशि विदेशी धरती पर सीधे उतारने के प्रलोभन में एक करोड़ तक भी पहुंच बना सकती है, भले ही वास्तविक स्थिति सर्वथा विपरीत हो। 'डंकी रूट' का यह सफर कितना दुखदायी हो सकता है, अपमान व निर्वासन के भुक्त भोगी 104 लोगों से पूछकर देखें; अधिकांश की रौंगटे खड़े करने वाली आपबीती दिल दहला देगी। डोनाल्ड ट्रंप के सत्ता में आने के उपरांत 1,700 अवैध भारतीय प्रवासियों को हिरासत में लेने की खबर है।

पारंपरिक विवाह की परिभाषा से अलग होती है ओपन मैरिज

आजकल शादी और रिश्तों का नया ट्रैंड सुर्खियों में है, जिसे ओपन मैरिज यानी खुली शादी का नाम दिया जा रहा है। शादी, जिसे आमतौर पर समर्पण और विश्वास का प्रतीक माना जाता है, उसमें अब ओपन मैरिज के कॉन्सैप्ट ने जबरदस्त सेंध लगा दी है। पहले यह ट्रैंड उच्च समाज या अत्यधिक अमीर लोगों तक ही सीमित था, लेकिन आजकल मध्यम वर्ग के लोग भी इसे अपना रहे हैं। समाज विज्ञानी कहते हैं कि ओपन मैरिज नॉन-मोनोगैमी यानी एक से अधिक लाइफ पार्टनर के प्रचलन का ही एक रूप है जिसमें जोड़ा इस बात पर सहमत होता है कि उनमें से कोई भी विवाह के बाद भी बाहर संबंध रख सकता है लेकिन आपसी सहमति के साथ। इससे दोनों को किसी भी तरह से कोई दिक्कत नहीं होगी। यानी पति अपने लिए गर्लफ्रैंड रख सकता है, पत्नी भी स्वीकृति से वॉयफ्रैंड रख सकती है।

ऐसे में कपल का प्रेम संबंध घर के बाहर भी बिना किसी रोक-टोक के बना रहता है। ओपन मैरिज एक ऐसा वैवाहिक संबंध है, जिसमें पति-पत्नी द्वारा आपसी सहमति से शादी के बाद बाहर भी अन्य रोमांटिक और/या शारीरिक संबंध बनाए जा सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि दोनों पार्टनर अपनी शादी के बाद किसी और के साथ भी रिश्ते में आ सकते हैं, बशर्ते इसमें दोनों की आपसी सहमति हो। इस प्रकार के रिश्ते में फिजिकल या भावनात्मक जुड़ाव हो सकता है, लेकिन यह पारंपरिक विवाह की परिभाषा से अलग होता है। इसके साथ ही एक मिलता-जुलता संबंध भी चर्चा में है जिसे पॉलीएमोरी कहते हैं। मनोविज्ञान बताता है कि पॉलीएमोरी और ओपन मैरिज में अंतर है। पॉलीएमोरी में एक व्यक्ति कई लोगों के साथ रोमांटिक और भावनात्मक संबंध रख सकता है, और यह फिजिकल रिश्ते से पहले भावनात्मक जुड़ाव पर ज्यादा ध्यान देता है।

वहीं, ओपन मैरिज का फोकस अधिकतर फिजिकल रिलेशनशिप पर होता है, जिसमें भावनात्मक जुड़ाव हो भी सकता है और नहीं भी। ओपन मैरिज में यह महत्वपूर्ण है कि दोनों पार्टनर्स की सहमति हो और दोनों एक-दूसरे के फैसले का सम्मान करें। जैसे एक सामान्य शादी के लिए समर्पण और समझदारी की जरूरत होती है, वैसे ही ओपन मैरिज के लिए भी कुछ खास नियम और सीमाएं होती हैं। हर किसी के लिए यह कॉन्सैप्ट उपयुक्त नहीं हो सकता है। इसके भी फायदे और नुकसान हैं, जिन्हें समझना बहुत जरूरी है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह के रिश्ते में प्रवेश करने से पहले दोनों पार्टनर्स को इसके सभी पहलुओं के बारे में अच्छे से जानकारी होनी चाहिए। इस रिश्ते में भावनात्मक स्थिरता और मानसिक संतुलन का होना बहुत जरूरी है। अगर कोई व्यक्ति इस रिश्ते के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं है, तो यह रिश्ते में समस्या का कारण बन सकता है। भारत में, खासकर शहरी क्षेत्रों में ओपन मैरिज धीरे-धीरे एक लोकप्रिय विकल्प बनती जा रही है, हालांकि इसे सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने वालों की संख्या अभी भी बहुत कम है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में लगभग 3 मिलियन (30 लाख) लोग ग्लीडेन नामक एक्स्ट्रा मैरिटल डेटिंग ऐप का उपयोग कर रहे हैं। यह ऐप उन शादीशुदा लोगों के लिए है जो बिना किसी झूठ के अपनी शादी के बाद बाहर नए रिश्ते की तलाश कर रहे हैं। इसके अलावा, एक अन्य सर्वे के अनुसार 60 प्रतिशत सिंगल भारतीय इस बात से सहमत हैं कि ओपन मैरिज और पॉलीएमोरी जैसे संबंध भविष्य में उनके लिए एक विकल्प हो सकते हैं। जैसा कि हर रिश्ते के कुछ फायदे और नुकसान होते हैं, वैसे ही ओपन मैरिज में भी दोनों पहलू हैं। मनोविज्ञानी ओपन मैरेज के बारे में बताते हैं कि इसमें पार्टनर्स को एक-दूसरे से खुलकर अपनी इच्छाओं को सांझा करने का मौका मिलता है। अगर रिश्ते में कोई एक पार्टनर संतुष्ट नहीं है, तो उसे रिश्ते से बाहर संतोष पाने का विकल्प मिलता है। कई बार पार्टनर्स इस रिश्ते में भावनात्मक

ओपन मैरिज में रिश्ता भले ही कितना भी एक्साइटिंग क्यों न लगता हो, लेकिन हमेशा कुछ बात का डर हमेशा लगता है, जैसे-अगर इमोशनल अटैचमैंट हो जाए तो अपने मन को कैसे मनाएं। कई बार तो समाज के समाने सच का खौफ पैदा हो जाता है। इससे ड्क्षचता और मानसिक दबाव होने का खतरा बढ़ता है जो दिमाग के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। बेहतर है कि इसमें प्रवेश करने से पहले दोनों पार्टनर्स पूरी तरह से मानसिक रूप से तैयार हों और इस रिश्ते के सभी पहलुओं को समझें।

परीक्षाओं में अंकों की होड़ क्यों?

देश में वार्षिक परीक्षाएं छात्रों के भविष्य को निर्धारित करने का प्रमुख माध्यम हैं। लेकिन हाल के वर्षों के दौरान, शिक्षा का मूल उद्देश्य ज्ञान अर्जन से हटकर केवल उच्च अंक प्राप्त करने तक ही सीमित होता जा रहा है। खासकर देहाती क्षेत्रों के विद्यार्थी अब नियमित कक्षाओं में पढऩे की बजाय कोचिंग सैंटरों पर अधिक निर्भर होते जा रहे हैं, क्योंकि वहां कम समय में अधिक अंक प्राप्त करने के आसान तरीके बताए जाते हैं। यह प्रवृत्ति न केवल शिक्षा प्रणाली को प्रभावित कर रही है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के समग्र विकास के लिए भी एक चुनौती बनती जा रही है। इसके पीछे शिक्षा प्रणाली की कई खामियां जिम्मेदार मानी जा सकती हैं। इनमें अहम हैं ग्रामीण स्कूलों में शिक्षकों की कमी, कमजोर आधारभूत संरचना और अपर्याप्त शिक्षण सामग्री के कारण विद्यार्थी नियमित कक्षाओं में रुचि नहीं लेते। इसके अलावा कोचिंग संस्कृति का प्रभाव इतना बढ़ गया है कि छात्रों को लगता है कि विद्यालय में पढऩे की तुलना में कोचिंग सैंटरों में परीक्षा के लिए विशेष तरीके सिखाए जाते हैं, जिससे वे कम समय में अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं। इतना ही नहीं, गांव के भोले-भाले युवकों को लुभाने की मंशा से कई कोचिंग सैंटर यह दावा भी करते हैं कि वे छात्रों को परीक्षा में अधिक अंक दिलाने में मदद करेंगे। ऐसे में यदि शिक्षक भी उदासीन रवैया अपनाना शुरू कर दें तो वह आग में घी का काम करता है। आज से कुछ वर्ष पूर्व 'थ्री इडियट्स' फिल्म में भी यह दिखाया गया था कि अधिक अंकों की होड़ का छात्रों पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जबकि होना यह चाहिए कि हर नौजवान को अपने दिल की आवाज सुनकर अपनी जिंदगी की राह तय करनी चाहिए, जिससे खुशी भी होती है और सही मायने में सफलता भी मिलती है। केवल ज्यादा पैसे कमाने के लिए बिना समझे रट्टा मारने वाले कोल्हू के बैल ही होते हैं। जिनकी जिंदगी में रस नहीं आ पाता। दूसरी तरफ इंजीनियरिंग की डिग्री की भूख इस कदर बढ़ गई है कि एक-एक शहर में दर्जनों प्राईवेट इंजीनियरिंग कॉलेज खुलते जा रहे हैं, जिनमें दाखिले का आधार योग्यता नहीं, मोटी रकम होता है। इन कॉलेजों में योग्य शिक्षकों और संसाधनों की भारी कमी रहती है। फिर भी ये छात्रों से भारी रकम फीस में लेते हैं। बेचारे छात्र अधिकतर ऐसे परिवारों से होते हैं, जिनके लिए यह फीस देना जिंदगी भर की कमाई को दाव पर लगा देना होता है। इतना रुपया खर्च करके भी जो डिग्री मिलती है उसकी बाजार में कीमत कुछ भी नहीं होती। तब उस युवा को पता चलता है कि इतना रुपया लगाकर भी उसने दी गई फीस के ब्याज के बराबर भी पैसे की नौकरी नहीं पाई। तब उनमें हताशा आती है। आज हालत यह है कि एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त लड़के साडियों की दुकानों पर सेल्समैन का काम कर रहे हैं। समय और पैसे का इससे बड़ा दुरुपयोग और क्या हो सकता है।ऊपर से कोचिंग सैंटरों की बढ़ती फीस ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए एक अतिरिक्त बोझ बन रही है। सोचने वाली बात यह है कि जब छात्र स्कूल की पढ़ाई को महत्व नहीं देते, तो विद्यालयों की गुणवत्ता और भी गिरती जाती है। इससे शिक्षा प्रणाली कमजोर होती है। वहीं परीक्षा में अच्छे अंक पाने के दबाव में कई छात्र नकल और अन्य अनुचित तरीकों का सहारा भी लेने लगते हैं। ऐसे में विद्यालयों की शिक्षा और गुणवत्ता में सुधार की बहुत जरूरत है। सभी ग्रामीण स्कूलों में शिक्षकों की जवाबदेही तय और विद्यालयों में शिक्षण सामग्री व संसाधनों को बेहतर किया जाना चाहिए। यदि सरकार विद्यालयों में परीक्षा की अच्छी तैयारी के लिए विशेष कक्षाएं संचालित करेगी तो विद्यार्थियों को कोचिंग सैंटर जाने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। परीक्षाओं को केवल अंकों के आधार पर तय करने की बजाय, प्रायोगिक ज्ञान, परियोजना कार्य और गतिविधि-आधारित मूल्यांकन को बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षकों को इस बात पर विशेष जोर देना चाहिए कि उन्हें विद्यार्थियों को अंकों की होड़ में धकेलने की बजाय, उन्हें वास्तविक ज्ञान अर्जित करने और रचनात्मकता विकसित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। यदि शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और समावेशी नहीं बनाया गया, तो यह प्रवृत्ति शिक्षा के व्यवसायीकरण को और अधिक बढ़ावा देगी। आवश्यक है कि विद्यालयों में गुणवत्ता सुधार के साथ-साथ परीक्षाओं में सफलता का मूल्यांकन केवल अंकों के आधार पर न किया जाए, बल्कि छात्रों की संपूर्ण योग्यता और कौशल को ध्यान में रखा जाए। जब शिक्षा का असली उद्देश्य ज्ञानार्जन बनेगा, तभी समाज का वास्तविक विकास संभव होगा

धनाढ्यों के विदेश पलायन पर प्रदर्शन क्यों नहीं?

ललित गर्ग

डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिका के राष्ट्रपति पद संभालने के बाद सौ से अधिक अवैध भारतीयों के पहले बैच को अपराधियों की तरह अपमानजनक तरीके से भारत भेजा गया है। सितम्बर- 2024 तक सालभर में अवैध रूप से अमेरिका जाने की कोशिश में 90 हजार से अधिक लोग पकड़े गये थे। ये लोग अपनी जीवनभर की कमाई एवं पूंजी को दांव पर लगाकर अमेरिका जैसे देशों में जाने के वैध एवं अवैध तरीके अपनाते हैं, इनका इस तरह देश छोड़कर जाने का कारण समझ में आता है, लेकिन धनाढ्य परिवारों का भारत से पलायन कर विदेशों में बसने का बढ़ता सिलसिला समझ से परे हैं। ऐसे क्या कारण है कि लोगों को देश की बजाय विदेश की धरती रहने, जीने, व्यापार करने, शिक्षा एवं रोजगार के लिये अधिक सुविधाजनक लगती है, नये बनते भारत के लिये यह चिन्तन-मंथन का कारण बनना चाहिए। संसद परिसर में अमेरिका से लौटे अवैध भारतीयों के स्वदेश लौटने की विडम्बनापूर्ण एवं विसंगतिपूर्ण स्थितियों को लेकर व्यापक प्रदर्शन हुए, लेकिन क्या इन बुद्धिमान विपक्षी दलों के सांसदों को कभी धनाढ्यों के भारत छोड़कर जाने एवं इस तरह भारत का अपमान करने की स्थितियों पर भी प्रदर्शन नहीं करना चाहिए?

'हेनले प्राइवेट वेल्थ माइग्रेशन रिपोर्ट' के अनुसार पिछले दो साल से ऐसे लोगों की संख्या औसतन 5,000 रही है। इन अमीरों को आप कभी शिकायत करते नहीं सुनेंगे। ये इतने स्मार्ट हैं कि बिना हौ-हल्ला किये विदेश में जाकर बस जाते हैं। तथ्य यह है कि इनके पास 'सरप्लस' है, और ये भारत में निवेश करने की जगह विदेश का रुख कर रहे हैं। इनमें से कई इसलिए देश छोड़ रहे हैं क्योंकि विदेश में सुरक्षा है और गुमनाम रहने की सुविधा है। इनसे भी जो ज्यादा अमीर हैं, ऐसे करोड़पति, अरबपति और खासकर डॉलर अरबपति कमाई तो भारत में करते हैं और जीते अमेरिका जैसे देशों में है। 'फोर्ब्स' के आंकड़ों के अनुसार ये केवल 200 हैं। करोड़पति अगर चुपचाप देश से जा रहे हैं, तो अरबपति विदेश की धरती से तेज आवाज में सरकार की तारीफ कर रहे हैं और इस तरह के मंत्रों का जाप कर रहे हैं कि 'हमारी अर्थव्यवस्था जल्द ही सबसे बड़ी तीसरी अर्थव्यवस्था बनने जा रही है', कि यह 'दुनिया में सबसे तेजी से वृद्धि दर्ज करा रही विशाल अर्थव्यवस्था है'। प्रश्न है कि इन समृद्ध लोगों का देश की तीसरी अर्थव्यवस्था बनाने में क्या योगदान है? उनका भारत से पलायन क्यों हो रहा है? सरकार इन पर क्या कदम उठा रही है? विपक्षी दल क्यों मौन धारण किये हुए है?

क्या कारण है कि जन्मभूमि को जननी समझने वाला भारतवासी आज अपनी समृद्धि को भोगने या अपनी प्रतिभा का विदेश की चकाचौंध भरी धरती पर उपयोग करने, उन्हें लाभ पहुंचाने विदेश की ओर भागता है और वहां जाकर सम्पन्न एवं भोगवादी जीवन जीने लगता है? क्या कारण है कि शस्य श्यामला भारत भूमि पर अपनी समृद्धि से विकास के नये क्षितिज उद्घाटित करने या अपनी प्रतिभा से देश को लाभान्वित करने की बजाय विदेश की धरती को लाभ पहुंचाते हैं। बड़ा सवाल यह भी उठना स्वाभाविक है कि आखिर क्या कमी है हमारे यहां? यह बात सही है कि गांव से कस्बे, कस्बे से शहर और शहरों से महानगरों में जाकर बसने की मानवीय प्रवृत्ति होती है। इसे विकास से भी जोड़ा जा सकता है। लेकिन जब यह दौड़ बहुत ज्यादा होने लगे और लोग अपनी जड़ें ही छोड़ने को आकुल दिखें तो सोचना जरूरी हो जाता है। मुम्बई,

दिल्ली, बेंगलूरु जैसे महानगर दुनिया के दूसरे महानगरों को टक्कर देने वाले हैं। फिर भी अगर ये भारतीय विदेशी महानगरों को ही चुन रहे हैं, तो तमाम पहलुओं पर विचार भी करना होगा। यह इसलिए भी जरूरी है कि यह दौड़ भारतीय महानगरों से विदेशी महानगरों की तरफ ही है। विदेश में बसने की यह दौड ऐसे समय देखने को मिल रही है जब देश में विकास के नये कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं, जीवनशैली उन्नत एवं सुविधापूर्ण होती जा रही है, व्यापार एवं व्यवसाय की संभावनाओं को पंख लग रहे हैं। भारत दुनिया में साख एवं धाक जमा रहा है। दुनिया की नजरें भारत पर लगी है और यहां अनंत संभावनाओं को देखते हुए विदेशी भारत आ रहे हैं। फिर भारतीय विदेशों की ओर क्यों जा रहे हैं।

सशक्त एवं विकसित भारत निर्मित करने, उसे दुनिया की आर्थिक महाशक्ति बनाने और अर्थव्यवस्था की सुनहरी तस्वीर निर्मित करने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। मोदी सरकार ने देश के आर्थिक भविष्य को सुधारने पर ध्यान दिया, उनके अमृत काल का विजन तकनीक संचालित और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है। मोदी सरकार की नियोजित एवं दूरगामी सोच का ही परिणाम है रिजर्व बैंक के पास सोने के भंडार में लगातार वृद्धि हो रही है। भारत में आर्थिक गतिविधियां नये शिखरों पर सवार है, क्योंकि भारत में डीमैट खाते 19 करोड़ के पार पहुंच चुके हैं। देश के कुल डीमैट खाते अब अन्य देशों की तुलना में नौवें स्थान पर हैं, जिसका मतलब है डीमैट खाते रूस, जापान, इथियोपिया, मैक्सिको जैसे देशों की आबादी से अधिक और बांग्लादेश की आबादी के करीब है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है, जिसमें 1,40,000 से अधिक पंजीकृत स्टार्टअप और हर 20 दिन में एक यूनिकॉर्न उभरता है। यूनिकॉर्न उन स्टार्टअप को कहा जाता है, जिनका मूल्यांकन एक अरब डॉलर हो जाता है।

इन उजले आंकड़ों में जहां मोदी के विजन 'हर हाथ को काम' का संकल्प साकार होता हुआ दिखाई दे रहा है, वहीं 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' का प्रभाव भी स्पष्ट रूप से उजागर हो रहा है। दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर भारत ने अनेक क्षेत्रों में नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। नयी आर्थिक उपलब्धियों एवं फिजाओं के बीच धनाढ्य परिवारों का भारत से पलायन कर विदेशों में बसने का सिलसिला चिन्ताजनक है। पलायनवादी सोच के कगार पर खड़े राष्ट्र को बचाने के लिए राजनीतिज्ञों एवं नीति नियामकों को अपनी संकीर्ण मनोवृत्ति को त्यागना होगा। तभी समृद्ध हो या प्रतिभाशाली व्यक्ति अपने ही देश में सुख, शांति, संतुलन एवं सह-जीवन का अनुभव कर सकेगा और पलायनवादी सोच से बाहर आ सकेगा। करोड़पतियों के देश छोड़कर जाने की 7500 की संख्या भले ही कुछ सुधरी है, लेकिन नये बनते, सशक्त होते एवं आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर भारत के लिये यह चिन्तन का विषय होना ही चाहिए कि किस तरह भारत की समृद्धि एवं भारत की प्रतिभाएं भारत में ही रहे।

भारत के अति समृद्धशालियों की संख्या समूचे विश्व में सर्वाधिक है। भारत के दृष्टिकोण से इस तथ्य का विश्लेषण ज्यादा जरूरी हो जाता है। जानना यह भी जरूरी है कि बचपन से जवानी तक का एक-एक पल देश में गुजारने और यहीं अमीर बनने का सफर तय करने के बाद देश से मोह भंग होने के कारण आखिर क्या हो सकते हैं?

तांबा चमकाकर सोने के जेवरात ले गए

गैंग ने महिला के मंगलसूत्र-कंगन में लगाया केमिकल, जलन हुई तो साफ करने का दिया झांसा

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में तांबा चमकाकर दिखाया और लाखों के सोने के जेवरात पार दिए। आरोपियों ने एक घर में घुसकर बातों ही बातों में महिला के गले में पहने जेवरात में कोई लाल पाउडर लगा दिया। तभी महिला के गले में जलन होने लगी तो उसे साफ करने का बहाना देकर सारे गहने पार कर दिए। इस मामले में पुलिस ने बिहार के एक गैंग के छह लोगों को पकड़ा है।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, पी सरोजिनी (67) ने खमतराई थाने में शिकायत दर्ज करवाई। जिसमें उन्होंने बताया कि 8 फरवरी की सुबह 11 बजे के करीब वह संतोषी नगर स्थित घर पर अपने पति के साथ थी। इस दौरान घर के गेट को खिसकाकर दो लोग घर के अंदर आए।

लाल पाउडर लगाते ही महिला के गले में जलन होने लगी: आरोपियों ने कहा कि टाइल्स, तांबा, पीतल बर्तन और सोने-चांदी की सफाई करते हैं। इसके लिए गुजरात से स्पेशल पाउडर भी लेकर आए हैं। महिला ने चेक करने के लिए उन्हें तांबे का एक लोटा दिया। जिसे उन्होंने चमका भी दिया।

हालांकि, आरोपियों पर शक होने के चलते महिला ने उन्हें गहने देने से मना कर दिया। इसके बाद आरोपी बात करते हुए महिला के गले में पहने हुए मंगलसूत्र और हाथ के कंगन और अंगूठी को छूकर देखने लगे। इस दौरान उन्होंने चालाकी से उसमें लाल पाउडर लगा दिया। केमिकल मिले हुए इस पाउडर के लगते ही महिला के शरीर में जलन होने लगी।

पानी में डुबोए जेवरात: आरोपियों ने पूरा शरीर जल जाएगा कहते हुए गहने उतरवा दिए। इसके बाद एक पॉलीथिन में सफेद पाउडर में सभी गहने को रखा और फिर पॉलीथिन को पानी में डुबो दिया। कुछ देर बाद पॉलीथिन में स्टेपलर लगाया और कहा कि, 10 मिनट बाद स्टेपलर खोल लेना। इसके बाद वे बाहर निकल गए।

पॉलीथिन के अंदर निकली प्लास्टिक चूड़ियां: घर वालों ने उनके बाहर निकलते ही फौरन पॉलीथिन को खोलकर देखा तो उसमें प्लास्टिक की चूड़ियां थी। इसके बाद महिला का पति आरोपियों को पकड़ने के लिए घर के बाहर दौड़ा। तभी तीन मोटरसाइकिल में करीब 6 लोग वहां से भागते दिखे। इस मामले में पुलिस स्टेशन में सूचना मिलते ही एंटी क्राइम यूनिट ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी।

होटल से पकड़ाए सभी आरोपी: पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे और गाड़ी की पहचान करते हुए रायपुर के होटल में जांच पड़ताल की। जानकारी मिली कि संदिग्ध लोग होटल में रुके हुए हैं। पुलिस ने आरोपियों को पूछताछ के बाद धोखाधड़ी केस में गिरफ्तार कर लिया है। सभी आरोपी बिहार के कटिहार जिले के रहने वाले हैं। आरोपियों के नाम अमरदीप शाह, अमित कुमार, मुकेश भगत, सिकंदर शाह, विपिन कुमार और शंभू शाह हैं।

भिलाई में भी एक महिला को लूटा: पुलिस ने जब आरोपियों से पूछताछ की तो पता चला कि उन्होंने खमतराई की घटना को अंजाम देने से पहले भिलाई में एक वारदात की है। सुपेला थाना के पास एक बुजुर्ग महिला को इसी पैटर्न में लूट कर वहां से फरार हो गए। इसके बाद यहां रायपुर के होटल में छिपे थे।

25 लाख का माल बरामद: आरोपियों के पास से पुलिस ने मंगलसूत्र, सोने की चेन, सोने के कंगन, अंगूठी, 3 बाइक और मोबाइल फोन समेत 25 लाख रुपए का सामान जब्त किया है। इनमें से एक आरोपी शंभू शाह के खिलाफ उत्तर प्रदेश के भी कई जिलों में चोरी ठगी जैसे मामले हैं। जिसमें वह जेल जा चुका है।

थाने के सामने महिला से चेन-अंगूठी की ठगी

4 युवकों ने झांसे में लेकर उतरवाए जेवरात, गुरुद्वारा से घर लौट रही थी महिला

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में थाने के सामने 4 युवकों ने मिलकर एक महिला को अपनी बातों में उलझा लिया, फिर उसके पहने सोने का चेन और अंगूठी उतरवाकर ले लिए। ठग उसे लेकर भाग गए। घटना सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र की है।

जानकारी के मुताबिक, दानीपारा की रहने वाली विमला रानी सलुजा (65) सोमवार की सुबह गुरुद्वारा गई थी। करीब 10 बजे वो पैदल अपने घर लौट रही थी। इसी दौरान बाइक सवार चार युवक आए और वारदात को अंजाम दिया। ठगे जाने के बाद महिला ने अपने परिजनों को जानकारी दी। फिर थाने में शिकायत दर्ज कराई गई।

सीसीटीवी कैमरे में दिखे आरोपी: सिटी कोतवाली के सामने कई दुकानें हैं। जहां सीसीटीवी कैमरा लगा हुआ है। ऐसे में कैमरे में युवक बाइक पर सवार होकर भागते हुए नजर आ रहे हैं। वहीं, पीड़ित महिला भी रोड पर चलते हुए नजर आ रही हैं। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

पहले भी हो चुकी घटना: 30 दिसबंर को शहर के सुभाष चौक पर इसी तरह की घटना हुई थी। जिसमें एमजी रोड निवासी संजना अग्रवाल से एक युवक उससे दांत के डॉक्टर का पता पूछा। इसके बाद खुद को उज्जैन का पंडित बताकर प्रसाद के नाम पर नारियल मांगा और उसने कहा कि अपने सोने के कंगन, अंगूठी और चेन को एक पर्स में डाल दो, नहीं तो तुम्हारे बच्चे को कुछ हो जाएगा। उसके बाद दूसरा युवक भी वहां आया और उसने भी संजना को अपने झांसे में लेकर बातों में उलझाए रखते हुए आरोपी मौका पाकर जेवरात लेकर भाग गए। जिसका आज तक खुलासा नहीं हो सका है।

त्रिस्तरीय पंचायत आम निर्वाचन 2025 खड़गवां हेतु सेक्टर अधिकारी नियुक्त

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। त्रि-स्तरीय पंचायत आम निर्वाचन 2025 के दौरान मतदान केंद्रों के भौतिक सत्यापन, आवागमन के रूट का सत्यापन, वल्नरेबिलिटि मैपिंग की कार्यवाही के तथा मतदान दलों पर प्रभावी नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण और चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष, स्वतंत्र रूप से सम्पन्न कराने हेतु निम्न अधिकारियों को विकासखण्ड खड़गवां हेतु सेक्टर अधिकारी नियुक्त किया जाता है। सेक्टर कोडा के लिए राकेश सिंह व्याख्याता को सेक्टर अधिकारी नियुक्त किया गया है। जिसके अन्तर्गत 8 मतदान केंद्र शामिल हैं। सेक्टर देवाडांड हेतु नीरज जायसवाल को सेक्टर अधिकारी नियुक्त किया गया है। जिसके अन्तर्गत 9 मतदान केंद्र शामिल हैं। सेक्टर सलका हेतु शान्तुन प्रजापति को सेक्टर अधिकारी नियुक्त किया गया है।

रायपुर में रह रहे 3 बांग्लादेशी मुंबई-एयरपोर्ट से अरेस्ट

3 दिन की पुलिस रिमांड पर तीनों भाई, इराक भाग रहे थे, कई फेक डॉक्यूमेंट जब्त

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर पुलिस और एटीएस ने 3 बांग्लादेशी भाइयों को मुंबई एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया है। तीनों भाई रायपुर में अवैध रूप से रह रहे थे। इनके पास से फर्जी पासपोर्ट और दस्तावेज मिले हैं। यहां से तीनों इराक के बगदाद भाग रहे थे, लेकिन पकड़े गए। रायपुर से ही सभी फर्जी दस्तावेज बनवाए थे।

मिली जानकारी मुताबिक गिरफ्तार आरोपियों में मोहम्मद इस्माइल (27), शेख अकबर (23) और शेख साजन (22) शामिल हैं। ये तीनों बांग्लादेशी रायपुर के टिकरापारा के मिश्रा बाड़ा ताजनगर में रहते थे। रायपुर पुलिस ने तीनों को कोर्ट में पेश किया। अब तीनों आरोपी 3 दिन की पुलिस रिमांड पर रहेंगे।

अब जानिए तीनों आरोपी रायपुर से कैसे पहुंचे एयरपोर्ट: दरअसल, तीनों आरोपी फर्जी दस्तावेज बनवाकर 26 जनवरी 2025 को बगदाद (इराक) जाने के लिए हावड़ा मुंबई मेल ट्रेन से मुंबई पहुंचे। पुलिस और एटीएस को इनके बारे में सूचना मिली। इसके बाद एटीएस और रायपुर पुलिस मुंबई पहुंची। एटीएस नागपाड़ा यूनिट की मदद से तीनों को पायधुनी इलाके से पकड़ा।

इनके पास से भारतीय पासपोर्ट, आधार कार्ड, पेन कार्ड, वोटर आईडी कार्ड के साथ ही बगदाद का वीजा बरामद किया गया है। संदिग्धों ने पूछताछ के दौरान बताया कि, वे तीनों जियारत के बहाने बगदाद में छिपकर रुकने वाले थे। वापस भारत नहीं आने वाले थे।

रायपुर में फर्जी पेन कार्ड, वोटर आईडी कार्ड बनवाए: रायपुर में रहने के दौरान तीनों भाइयों ने भारतीय दस्तावेज आधार कार्ड, पेन कार्ड और वोटर आईडी बनवाया। यूसीसी लागू होने से पकड़े जाने का डर था। इसलिए जन्मतिथि के लिए फर्जी प्रमाण पत्र बनवाए। इसके बाद तीनों ने फर्जी मार्कशीट बनवाए।

फर्जी मार्कशीट बनाने में सत्कार कम्प्यूटर के संचालक मोहम्मद आरिफ ने मदद की। आरिफ इससे पहले भी कई लोगों के लिए फर्जी दस्तावेज बनवाए हैं। उनको इराक भेजा जा चुका है, जो वापस लौटकर भारत नहीं आए हैं।

फर्जी दस्तावेज बनाने का चल रहा रैकेट: मोहम्मद आरिफ और शेख अली संगठित रैकेट बनाकर फर्जी दस्तावेज बनाते हैं। लोगों को देश के बाहर भेजते हैं। संदिग्धों की अन्य अवैधानिक गतिविधियों के संबंध में जांच की जा रही है। गिरफ्तार तीनों आरोपियों के पिता शमसुद्दीन, मां रशीदा, भाई अजगर, बहन सुरैया, इस्माइल की पत्नी यास्मीन और 2 बेटियां बांग्लादेश में हैं।

बेटी को जबरन ले गया पिता

सास को पीटा,जान से मारने की धमकी दी, 2 साल से मां संग रह रही थी बच्ची

मीडिया ऑडीटर, कांकेर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कांकेर में एक पिता ने अपनी नाबालिग बेटी को जबरन उठा ले जाने का मामला सामने आया है। भारती साहू ने आजाद चंद भोई से प्रेम विवाह किया था। दोनों को एक बेटी हुई, लेकिन वैवाहिक जीवन में कलह के कारण भारती अपनी बेटी के साथ मायके में रहने लगी।

करीब दो साल तक बच्ची अपनी मां और नानी के साथ रह रही थी। 8 फरवरी को आजाद अचानक अपनी सास के घर पहुंचा और बेटी को जबरन ले गया। अगले दिन सुबह साढ़े 10 बजे जब नानी जगबती साहू अपनी नातिन को लेने दामाद के घर पहुंची, तो आजाद ने न केवल बच्ची देने से मना कर दिया बल्कि गाली-गलौज करते हुए उनके साथ मारपीट भी की। इस हमले में जगबती के सिर, कंधे, हाथ और घुटनों में चोटें आईं।

पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ धारा 115(2), 296, 351(2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। यह घटना शिवनगर इलाके की है, जहां पीड़िता अपनी बेटी और नातिन के साथ रहती थी।

नकाबपोश युवकों ने टीचर के घर में की लूटपाट

देर रात छप्पर उखाड़कर अंदर घुसे, जान से मारने की धमकी देकर कैश-जेवर लूटा

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा (एजेंसी)। सरगुजा जिले के 3 नकाबपोश बदमाशों ने शिक्षिका के घर में घुसकर कैश, मोबाइल और जेवरात लूट ले गए। शिक्षिका रात को घर में सो रही थी। इसी दौरान बदमाश घर का छप्पर तोड़कर अंदर घुसकर वारदात को अंजाम दिया। घटना सीतापुर थाना क्षेत्र में केरजू चौकी की है। जानकारी के मुताबिक, ढोढ़ागांव हाई स्कूल में पदस्थ लेक्चरर एलबी दिव्या कांता तिर्की (46) कुनमेरा निवासी टंकेश्वर यादव के घर किराए के मकान में रहती है। दिव्याकांता तिर्की 7 फरवरी की रात घर पर अकेली सोई थी। रात करीब डेढ़ बजे तीन नकाबपोश बदमाश घर का छप्पर उखाड़कर घर के अंदर घुस गए।

जान से मारने की धमकी देकर लूटा: घर में घुसे नकाबपोश युवकों ने शिक्षिका की अलमारी खोली, तो उसकी नींद खुल गई। उसे जान से मारने की धमकी देकर युवकों ने उससे 3500 रुपए कैश, मोबाइल, सोने के टाप्स और दो जोड़ी पायल समेत दस्तावेजों से भरा बैग लूटकर भाग गए।

आरोपियों को शिक्षिका पहचान नहीं सकी। पति के घर वापस आने पर शिक्षिका ने घटना की सूचना दूसरे दिन थाने में शिकायत दर्ज कराई। केरजू चौकी प्रभारी राजेश्वर महंत पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली।

नकाबपोश बदमाशों की तलाश जारी: आशंका है कि, लुटेरों ने शिक्षिका की रेकी की थी। उनकी जानकारी में था कि शिक्षिका अकेले ही घर में है। केरजू चौकी प्रभारी राजेश्वर महंत ने बताया कि, आरोपियों की तलाश की जा रही है। फिलहाल, आरोपियों का कोई सुराग नहीं मिला है। सीतापुर पुलिस ने मामले में धारा 331 (2), 309 (4) के तहत अपराध दर्ज किया गया है।

डंपर ने बाइक सवार को कुचला, मौत

सामने से आ रही दूसरी बाइक भी भिड़ी, दो युवक घायल

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में डंपर ने बाइक सवार युवक को कुचल दिया। युवक का सिर पहिये के नीचे कुचल जाने से उसकी जान चली गई। जबकि दूसरे बाइक में सवार दो युवक घायल हो गए। घटना खरसिया थाना क्षेत्र की है।

जानकारी के मुताबिक, जैजेपुर थाना क्षेत्र के गुच्छकुलिया गांव के रहने वाले संजीव उरांव (32) अपनी बाइक पर सवार होकर रायगढ़ किसी कार्यक्रम में शामिल होने आया था। सोमवार सुबह करीब 10 बजे खरसिया के पानीपाथर की ओर आ रहा था। इसी दौरान पीछे से आ रहे डंपर ने उसे जबरदस्त ठोकर मार दी। जिससे वो गिर गया। उसका सिर ट्रक के पहिए के नीचे आ गया।

दो युवक हुए घायल: वहीं, ट्रक के बेकाबू होने से बाइक सवार दो युवक भी टकरा गए। जिससे दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद आसपास के लोगों की काफी भीड़ इकट्ठा हो गई। मामले की जानकारी खरसिया पुलिस को दी गई।

महिला हेडमास्टर बोलीं-टीचर ने कमर पर हाथ रखा

बाजार में छेड़खानी की, बदनाम करने की धमकी दी, एफआईआर के बाद आरोपी फरार

मीडिया ऑडीटर, राजनांदगांव (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के सरकारी स्कूल में पदस्थ महिला हेडमास्टर छेड़खानी का शिकार हुई है। आरोपी शिक्षक विष्णु शर्मा भी उसी गांव में मिडिल स्कूल में पढ़ाता है। महिला का कहना है कि, टीचर कई दिनों से परेशान कर रहा था। एक बार तो उसने कमर पर हाथ भी रखा था।

महिला हेडमास्टर ने बदनाम करने की धमकी मिलने की भी बात कही है। परेशान होकर महिला ने तुमड़ीबोड़ थाने में 30 जनवरी को एफआईआर दर्ज कराई थी। इसके बाद से आरोपी शिक्षक फरार है। वहीं शिक्षा विभाग ने शिकायत के बाद आरोपी शिक्षक को निलंबित कर दिया गया है।

टीचर की नीयत शुरू से ठीक नहीं- महिला हेडमास्टर: इस मामले में महिला हेडमास्टर से बात की गई। उन्होंने बताया कि 3 साल पहले उनकी हेडमास्टर के पद पर पोस्टिंग हुई थी। इसके बाद से उन्हें लगातार परेशान किया जा रहा है। शुरू से ही आरोपी टीचर की नीयत मुझ पर ठीक नहीं रही है।

हाथ पकड़ा, फिर कमर पर हाथ रखा: आगे उन्होंने कहा कि, विदाई कार्यक्रम के दिन भी मेरे हाथ को उसने बुरी तरह टच किया था। इसकी शिकायत उन्होंने प्रिंसिपल मैडम और उच्च अधिकारियों से भी की लेकिन शिकायत को नजरअंदाज किया गया। लगा कि आगे ऐसी हरकत नहीं होगी।

इसके बाद 25 सितंबर 2025 को किसी कार्यक्रम के लिए टीचर चंदा मांगने आए थे। इस दौरान उन्होंने मेरे हाथ पकड़ा और कमर पर भी हाथ रखा। विरोध करने पर बदनाम करने और जॉब छुड़वा देने की धमकी दी। उसके बाद से वे मेरे पीछा करने लगे।

बाजार में रास्ता रोककर की छेड़खानी, एक थाने में एफआईआर नहीं हुई: महिला हेडमास्टर ने बताया कि, 22 जनवरी की शाम जब वह डोंगरगांव के बाजार गई थी तब भी आरोपी उसका रास्ता रोककर उसके साथ छेड़खानी करने लगा। इसकी शिकायत उन्होंने डोंगरगांव थाने में की लेकिन रिपोर्ट दर्ज नहीं की गई।

इसके बाद उन्होंने तुमड़ीबोड़ थाने में मामले की शिकायत की। रिपोर्ट दर्ज होने की जानकारी मिलते ही आरोपी शिक्षक फरार हो गया है। जानकारी के मुताबिक आरोपी छत्तीसगढ़ शिक्षक संगठन का प्रदेश उपाध्यक्ष और सहायक शिक्षक संघ का जिला अध्यक्ष भी है।

मनेन्द्रगढ़, नई लेदरी, झगराखाण्ड खोंगापानी और जनकपुर की मतदान केंद्रों एवं स्ट्रांग रूम का किया गया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगरीय निकाय निर्वाचन 2025 के अंतर्गत नगर पालिका एवं नगर पंचायत में निष्पक्ष, स्वतंत्र और पारदर्शी चुनाव संपन्न कराने के उद्देश्य से प्रशासन द्वारा सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशानुसार मतदान केंद्रों का भौतिक सत्यापन, आवागमन रूट की जांच और वल्नरेबिलिटी मैपिंग का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया गया है। निर्वाचन प्रक्रिया को सुचारू और व्यवस्थित बनाए रखने के लिए सेक्टर अधिकारियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में मतदान केंद्रों का गहन निरीक्षण किया और वहां की मूलभूत सुविधाओं का मूल्यांकन किया। नगर पालिका परिषद् मनेंद्रगढ़, नगर पंचायत नई लेदरी, नगर पंचायत झगराखांड, नगर पंचायत खोंगापानी और नगर पंचायत जनकपुर में मतदान केंद्रों की स्थिति, स्ट्रांग रूम, सुरक्षा प्रबंध, आवागमन की सुगमता और अन्य व्यवस्थाओं की जांच की गई। प्रशासन यह सुनिश्चित कर रहा है कि प्रत्येक मतदाता निर्भीक होकर अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके। चुनावी प्रक्रिया को निष्पक्ष बनाए रखने के लिए संवेदनशील और अति संवेदनशील मतदान केंद्रों की पहचान कर वहां विशेष सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं।

मतदाताओं की सुविधा को प्राथमिकता देते हुए मतदान केंद्रों पर पेयजल, शौचालय, बिजली, रैंप और व्हीलचेयर जैसी आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था की गई है। विशेष रूप से दिव्यांगजनों और बुजुर्ग मतदाताओं के लिए मददगार व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं, ताकि वे बिना किसी परेशानी के मतदान कर सकें। प्रशासन की ओर से सुरक्षा बलों की तैनाती पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि मतदान प्रक्रिया शांतिपूर्ण और निष्पक्ष तरीके से संपन्न हो सके।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि निर्वाचन प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाए रखने में कोई भी लापरवाही स्वीकार्य नहीं की जावेंगी । सभी संबंधित अधिकारियों को पूरी जिम्मेदारी के साथ कार्य करने के निर्देश दिए गए हैं ।

नगरपालिका निर्वाचन-2025 हेतु जिले के सभी नगर पंचायतों के लिए मतदान दल हुआ रवाना

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देश एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी के मार्गदर्शन में, नगरपालिका निर्वाचन-2025 के अंतर्गत आज सभी नगर पालिकाओं एवं नगर पंचायतों के लिए मतदान दल निर्धारित निर्वाचन सामग्री वितरण केंद्र पर पहुँचकर आवश्यक दस्तावेजों एवं उपकरणों की प्राप्ति कर के सामग्री वितरण के पश्चात, मतदान दल अपराह्न 01 बजे तक अपने-अपने मतदान केंद्रों की ओर प्रस्थान कर गए। साथ ही नगर पालिक निगम चिरमिरी, नगर पालिका परिषद् मनेन्द्रगढ़, नगर पंचायत नई लेदरी, नगर पंचायत खोंगापानी, नगर पंचायत झगराखाण्ड एवं नगर पंचायत जनकपुर के मतदान दलों को उनके मतदान केन्द्रों के लिए बस से रवाना कर दिए गए हैं। निर्वाचन आयोग ने विस्तृत योजना एवं कड़ाई से मानकों का पालन करते हुए सभी तैयारियाँ पूरी कर ली गई हैं।

बेंगलुरु में एयरो इंडिया-2025 शो

बेंगलुरु (एजेंसी)। एशिया के सबसे बड़े एयर शो में से एक एयरो इंडिया 2025 की आज से शुरुआत हो गई। यह शो बेंगलुरु के येलाहेंका एयरफोर्स स्टेशन पर आयोजित किया जा रहा है। जो 14 फरवरी तक चलेगा। एयर शो में तेजस मार्क 1ए विमान ने हवा में 360ए चक्कर लगाया। वहीं सुखोई एसयू-30 एमकेआई ने भी आसमान में करतब दिखाया। सूर्य किरण ने हवा में उड़ान के दौरान तीन रंग फैलाए। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने एयरोस्पेस और रक्षा प्रदर्शनी के 15वें संस्करण का उद्घाटन किया। शो में करीब 30 देशों के रक्षामंत्री या प्रतिनिधि और 43 देशों के वायु सेना प्रमुख और सचिव मौजूद रहेंगे। शो के पहले 3 दिन बिजनेस विजिटर्स और आखिरी 2 दिन आम लोगों के लिए रहेंगे। इसमें पांचवीं जनरेशन के फाइटर जेट भी शामिल किए गए हैं। अमेरिकी एयरफोर्स ने अपने पांचवीं जनरेशन के फाइटर जेट एफ-35 को और रूस ने अपने सुखोई-एसयू-57 को बेंगलुरु के एयर शो में प्रदर्शन के लिए भेजा है।

बिजनेसमैन नाना को नाती ने 70 बार चाकू मारा

हैदराबाद (एजेंसी)। हैदराबाद में 29 साल के युवक ने अपने 86 साल के बिजनेसमैन नाना की 6 फरवरी को हत्या कर दी। बिजनेसमैन वेलामती चंद्रशेखर 500 करोड़ के मालिक थे। नाती कीर्ति तेजा ने उन पर चाकू से 70 से ज्यादा वार किए। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया और बताया कि हत्या की वजह प्रॉपर्टी विवाद है। पुलिस के मुताबिक चाकू से वार करते हुए तेजा कहता रहा, तुमने संपत्ति का सही बंटवारा नहीं किया। कोई मुझे सम्मान नहीं दे रहा। मुझे मेरा पैसा दो। पुलिस ने बताया कि विक्टिम वेलामती चंद्रशेखर सोमजीगुड़ा में अपनी बेटी सरोजिनी देवी के साथ रहते थे। सरोजिनी देवी तेजा की मां हैं। 6 फरवरी की शाम को तेजा नाना से मिलने उनके घर पहुंचा। जब सरोजिनी देवी किचन में कॉफी लेने गईं, तो तेजा और राव के बीच प्रॉपर्टी के बंटवारे को लेकर बहस शुरू हो गई। गुस्से में तेजा ने चाकू निकाला और राव पर ताबड़तोड़ वार कर दिए।

महबूबा की बेटी के 2 पर्सनल सिक्योरिटी ऑफिसर सस्पेंड

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री के महबूबा मुफ्ती की बेटी इल्तिजा के दो पर्सनल सिक्योरिटी ऑफिसर्स को सस्पेंड कर दिया गया है। उमर सरकार ने इल्तजा के श्रीनगर में नजरबंद होने के बावजूद कठुआ पहुंचने पर ये कार्रवाई की है। इल्तजा ने 8 फरवरी को आरोप लगाया था उमर सरकार ने महबूबा और उन्हें घर में नजरबंद किया है।

परीक्षा पे चर्चा-पीएम ने फोकस के लिए दिया क्रिकेट मंत्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम ने स्टूडेंट्स से कहा- सबसे पास दिन में 24 घंटे ही होते हैं। कोई इतने ही समय में सब-कुछ कर लेता है, तो कोई यही कहता रहता है कि समय नहीं है। ऐसे में टाइम मैनेजमेंट सीखना बहुत जरूरी है। पेरेंट्स-टीचर्स बच्चों की भावनाओं को समझें परिवार बच्चों को प्रेशर देता है। बच्चे को आर्टिस्ट बनना है तो कहते हैं कि इंजीनियर बनो। माता-पिता आप अपने बच्चों की इच्छाओं को समझिए, क्षमताओं को समझिए। मदद कीजिए। हमें सोचना चाहिए कि परीक्षा जरूरी है या जीवन। टीचर्स दूसरे बच्चों से तुलना न करें। कुछ कहना है तो अलग से कहें। टारगेट ऐसा बनाएं जो पहुंच में हो, पकड़ में नहीं ज्यादातर लोग खुद से स्पर्धा नहीं करते, दूसरे से करते हैं। जो खुद से स्पर्धा करता है, उसका विश्वास कभी टूटता नहीं। टारगेट हमेशा ऐसा हो, जो पहुंच में हो, लेकिन पकड़ में न हो। 95 प्रतिशत मार्क्स लाने का टारगेट था और 93 प्रतिशत आए तो आप सफल हैं।

बॉडी पर कंट्रोल सीखने के लिए प्राणायाम करें झरने की आवाज सुनिए। आपको आवाज सुनाई दे रही है। आप लोगों को मेडिटेशन करना चाहिए। आपके मन में क्या चल रहा है, उसे भी सोचिए। अगर ऐसा कर रहे हैं तो आपका ध्यान केंद्रित हो रहा है। परेशानी, चिंता से निकलने के लिए प्राणायाम कीजिए। आपको आपकी बॉडी पर कंट्रोल होगा। मन की बात पेरेंट्स से कहें, तनाव दूर होगा अगर किसी पल को जिया नहीं तो वो चला जाएगा, फिर नहीं लौटेगा। याद करें कि अपने भाई से पहले बहुत बात करते थे, अब नहीं करते। पहले स्कूल से आते ही सारी बात मां को बताते थे, अब नहीं कर रहे हैं। धीरे-धीरे आप सिमटते जाते हैं। इसके बाद डिप्रेशन में चले जाते हैं। टाइम मैनेजमेंट सीखें सबसे पास दिन में 24 घंटे होते हैं। कोई इसमें सब-कुछ कर लेता है, कोई रोता रहता है कि पढ़ने का समय नहीं मिलता। वास्तव में वो अपना समय मैनेज करना नहीं जानते। यह सोचना चाहिए कि हम अपने समय का ज्यादा से ज्यादा उपयोग कैसे करें।

पंजाब कांग्रेस का दावा- 30 आप विधायक हमारे संपर्क में, केजरीवाल ने सभी विधायक दिल्ली बुलाए

चंडीगढ़ (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में मिली हार के बाद पंजाब में भी उथल-पुथल शुरू हो गई है। पंजाब कांग्रेस के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने दावा है कि आम आदमी पार्टी के 30 विधायक उनके संपर्क में हैं। इसी बीच आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पंजाब के विधायकों को दिल्ली बुलाया है। वे मंगलवार (11 फरवरी) सुबह 11 बजे कपूरथला भवन में सभी विधायकों से मिलेंगे। सीएम भगवंत मान और सभी मंत्री भी मौजूद रहेंगे। माना जा रहा है कि इसी वजह से पंजाब सरकार की 10 फरवरी को होने वाली कैबिनेट मीटिंग भी टाल दी गई। पंजाब में 2022 में सभी 117

विधानसभा सीटों के लिए चुनाव हुए थे, इसमें आप ने 92, कांग्रेस 18, भाजपा 2, शिरोमणि अकाली दल 3 और बसपा 1 सीट जीती थी। पंजाब में बहुमत का आंकड़ा 59 का है। ऐसे में अगर 30 विधायक पार्टी छोड़ भी देते हैं तो भी आप के पास 62 विधायक रहेंगे और सरकार को कोई खतरा नहीं होगा। हालांकि आप के प्रवक्ता नील गर्ग का कहना है कि दिल्ली में पार्टी की रूटीन मीटिंग होने जा रही है। यह पार्टी ने तय करना है कि मीटिंग चंडीगढ़ में करनी है या दिल्ली में। पटियाला से कांग्रेस सांसद डॉ धर्मवीर गांधी ने कहा कि आपकी केंद्रीय लीडरशिप को लेकर पंजाब के विधायकों के अंदर आक्रोश है। यह लोग पंजाब संसाधनों व स्रोतों पर कब्जा कर रहे हैं। राज्यसभा में इन्होंने पंजाब से बाहर के लोगों को भेजा। ये बहुत से तरीके से शोषण कर रहे हैं।

राष्ट्रपति ने महाकुंभ में डुबकी लगाई

प्रयागराज (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू सोमवार को महाकुंभ पहुंचीं। उन्होंने संगम में 3 डुबकी लगाई। भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया। स्नान से पहले मां गंगा को पुष्प अर्पित किए। मंत्रोच्चार के बीच गंगा पूजन और आरती की। इसके बाद राष्ट्रपति लेटे हनुमान मंदिर पहुंचीं और आरती की, फिर अक्षयवट धाम पहुंची और दर्शन-पूजन किया। राष्ट्रपति के साथ राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और सीएम योगी भी हैं। राष्ट्रपति का हेलिकॉप्टर सोमवार सुबह साढ़े 9 बजे बमरौली एयरपोर्ट पर लैंड हुआ। यहां राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और सीएम योगी ने स्वागत किया। वहां से अरैल पहुंचीं, फिर

बोट से संगम पहुंचीं और स्नान किया। राष्ट्रपति शाम चार बजे तक प्रयागराज में रहेंगी। द्रौपदी मुर्मू देश की दूसरी राष्ट्रपति हैं, जिन्होंने महाकुंभ में स्नान किया। इससे पहले, 1954 में देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने भी महाकुंभ में स्नान किया था। महाकुंभ का आज 29वां दिन है।

मणिपुर में सेना ने 8 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया

मणिपुर (एजेंसी)। मणिपुर में सेना ने जॉइंट ऑपरेशन में 8 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। सेना ने सोमवार को बताया कि असम राइफल्स, मणिपुर पुलिस ने 2 से 8 फरवरी के बीच काकचिंग, थौबल, टेंग्नौपाल, विष्णुपुर, इंफाल ईस्ट और चंदेल जिलों में जॉइंट ऑपरेशन चलाया था। इस दौरान उग्रवादियों से 25 हथियार और बड़ी मात्रा में गोला-बारूद बरामद किए गए हैं।

2 फरवरी- असम राइफल्स ने 2 फरवरी को चंदेल जिले के लाइचिंग-दुथांग क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाया। इसमें एक एके-47 राइफल, एक देसी पीटी 303 राइफल, एक 9 एमएम पिस्तौल, एक 12 बोर राइफल, ड्वश्वष्ठ, ग्रेनेड, गोला-बारूद और अन्य सामग्री बरामद की।

3 फरवरी- सेना ने सीआरपीएफ और मणिपुर पुलिस के साथ बिष्णुपुर जिले के सैटन खुनाओ और आसपास के गांवों से एक एके-47 राइफल, दो 9 एमएम सबमशीन गन, दो पिस्तौल, एक 2 इंच मोर्टार, ग्रेनेड, दो आईईडी और गोला-बारूद बरामद किया। 4 फरवरी- असम राइफल्स के जवानों ने टेंग्नौपाल जिले के वन क्षेत्र में एक एरिया डोमिनेशन पेट्रोल के दौरान तीन संदिग्धों को गिरफ्तार किया।

पटियाला में कूड़े के ढेर से रॉकेट मिले

पटियाला (एजेंसी)। पंजाब के पटियाला में एक स्कूल के पास से 8 रॉकेट बरामद हुए हैं। सबसे पहले इन पर ट्रैफिक पुलिस की नजर पड़ी। पुलिस ने बम स्क्वॉड बुलाकर इन्हें कब्जे में ले लिया। मौके पर पहुंचे एसएसपी नानक सिंह ने बताया कि इन रॉकेट के सेल्स में विस्फोटक नहीं है। यह कहां से आए, इसकी जांच की जा रही है। एसएसपी ने कहा कि सेना को भी इसकी जानकारी दी गई है। सेना की टीम भी जांच के लिए आ रही है, जो यह पता करेगी यह रॉकेट के शेल कितने पुराने हैं। हालांकि ऐसे लगता है कि कोई कबाड़ी या कोई व्यक्ति इसे फेंक कर चला गया था। जानकारी के मुताबिक दोपहर 12 बजे के करीब किसी राहगीर ने ट्रैफिक पुलिस को इस बारे में सूचित किया था। सूचना मिलते ही पुलिस एक्टिव हो गई है। साथ ही तुरंत लाहौरी गेट की टीम ने पहुंचकर राकेट को अपने कब्जे में लिया। इसके बाद बम स्क्वॉयड की टीम ने वहां पर पहुंचकर उसकी जांच की ।

तिरुपति लड्डू विवाद,सीबीआई ने 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया

नई दिल्ली/तिरुपति (एजेंसी)। तिरुपति मंदिर के लड्डू प्रसादम् में मिलावट के मामले में गिरफ्तार 4 आरोपियों को कोर्ट ने 20 फरवरी तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। सीबीआईटीम ने इन्हें रविवार को गिरफ्तार किया था, इसके बाद उन्हें कोर्ट में पेश किया गया था। आरोपियों की पहचान भोले बाबा डेयरी के पूर्व निदेशक विपिन जैन और पोमिल जैन, वैष्णवी डेयरी के अपूर्व चावड़ा और एआर डेयरी के राजू राजशेखरन के रूप में हुई है। चारों को प्रसाद के लड्डू बनाने के लिए घी की सप्लाई में अनियमितताएं मिलने पर गिरफ्तार किया गया था। सीबीआई को जांच में पता चला कि वैष्णवी डेयरी के प्रतिनिधियों ने एआर डेयरी के नाम पर टेंडर हासिल किए थे। वैष्णवी डेयरी ने टेंडर प्रक्रिया में हेराफेरी करने के लिए एआर डेयरी के नाम का इस्तेमाल करते हुए फर्जी डॉक्यूमेंट और मुहरें बनाई थीं। वैष्णवी डेयरी द्वारा बनाए गए नकली रिकॉर्ड में दावा किया गया कि उसने रुड़की में भोले बाबा डेयरी से घी खरीदा है, लेकिन उसके पास जरूरी मात्रा में आपूर्ति करने की क्षमता नहीं थी।

हिमाचल के मुख्यमंत्री हुए बीमार

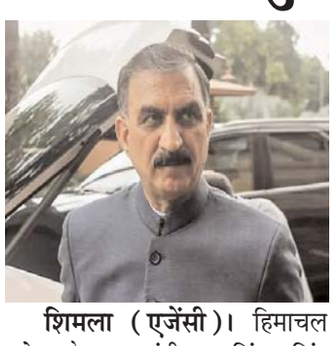

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू बीमार पड़ गए हैं। उन्हें वायरल फीवर हो गया है। इसे देखते हुए मुख्यमंत्री ने आज की मीटिंग स्थगित कर दी है। अस्वस्थ होने के बाद मुख्यमंत्री सुक्खू आज सचिवालय भी नहीं आए। वह सरकारी आवास ओक ओवर में रुके हुए हैं और स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। बताया जा रहा है कि आईजीएमसी के डॉक्टर उनके स्वास्थ्य पर नजर बनाए हुए है और दवाइयां दे दी है। बता दें कि सीएम सुक्खू ने आज करुणामूलक आधार पर नौकरी के लंबित मामले निपटाने के लिए कैबिनेट सब कमेटी की मीटिंग बुला रखी थी। इसमें मृतक कर्मचारियों के आश्रितों को नौकरी देने को लेकर चर्चा की जानी थी और अंतिम फैसला कैबिनेट में होना था। मगर मुख्यमंत्री के बीमार पड़ने की वजह से आज की बैठक टाल दी गई है। इस वजह से मुख्यमंत्री ने आज सभी लोगों से मीटिंग को भी कैंसिल कर दिया है।

बजट सत्र का सातवां दिन-सोनिया गांधी राज्यसभा में बोलीं- 14 करोड़ लोग खाद्य सुरक्षा कानून से वंचित, सरकार जल्द से जल्द जनगणना करवाए

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के बजट सत्र का सोमवार को सातवां दिन है। राज्यसभा में कांग्रेस सांसद सोनिया गांधी ने कहा कि 14 करोड़ लोग खाद्य सुरक्षा कानून से बाहर हैं। उन्हें इस कानून के दायरे में लाना चाहिए। सोनिया ने सरकार से मांग की कि जल्द से जल्द जनगणना करवानी चाहिए। संसद में आज महाकुंभ भगदड़ को लेकर हंगामा हो सकता है। विपक्षी

सांसद इस मुद्दे पर चर्चा चाहते हैं। उनकी मांग है कि यूपी सरकार भगदड़ में मरने वालों का सही आंकड़ा जारी करे। आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने राज्यसभा में इसी मुद्दे पर चर्चा के लिए स्थगन नोटिस दिया है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 7 फरवरी को नए इनकम टैक्स बिल को मंजूरी दे दी थी। आज इसे लोकसभा में पेश किया जा सकता है।

लंपी स्किन डिसीज के लिए देश की पहली वैक्सीन को ड्रग्स अथॉरिटी ने लाइसेंस दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत बायोटेक ग्रुप की कंपनी बायोवेट की डेयरी पशुओं को होने वाली बीमारी लंपी स्किन डिसीज के लिए बनाई वैक्सीन को सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइजेशन ने लाइसेंस दे दिया है। कंपनी का दावा है कि यह दुनिया की पहली वैक्सीन है जो तेजी से फैलने वाले वायरल इन्फेक्शन से मवेशियों को बचाएगी। इस बीमारी के लक्षणों में बुखार, त्वचा पर सूजन और लिम्फ नोड्स का बढ़ना शामिल हैं। बायोवेट ने इस वैक्सीन को भारतीय

कृषि अनुसंधान परिषद के सहयोग से तैयार किया है। इसे बायोलंपीवैक्सीन नाम दिया गया है और जल्द ही इसे बाजार में लॉन्च किया जाएगा।

विधायकों में से ही होगा दिल्ली का अगला मुख्यमंत्री, महिला सीएम फेस को लेकर भी चर्चा तेज

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की शानदार जीत के बाद राष्ट्रीय राजधानी में एक महिला मुख्यमंत्री देखने को मिल सकती है। सूत्रों ने इस बात के संकेत दिए है। पार्टी ने 70 में से 48 सीटें हासिल कर आम आदमी पार्टी (आप) के एक दशक लंबे शासन को समाप्त कर दिया है।

फिलहाल शीर्ष पद को लेकर चर्चा और अटकलों का दौर जारी है। सूत्रों ये भी बता रहे हैं कि अगला

मुख्यमंत्री नवनिर्वाचित विधायकों में से ही चुना जाएगा। सूत्रों ने बताया कि एक महिला विधायक मुख्यमंत्री के चेहरे के रूप में उभर सकती है। सूत्रों ने कहा कि भगवा पार्टी कम प्रतिनिधित्व वाली पृष्ठभूमि से एक उपमुख्यमंत्री नियुक्त करने पर भी विचार कर रही है, साथ ही कहा कि नए मंत्रिमंडल में महिलाओं और दलितों का मजबूत प्रतिनिधित्व होने की उम्मीद है। भाजपा के विजयी उम्मीदवारों में से चार महिला विधायकों ने महत्वपूर्ण अंतर से अपनी सीटें सुरक्षित कीं।

यूपी की योगी सरकार ने पीएम आवास योजना के बदले नियम

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने सरकारी योजना के तहत मिलने आवास के नियमों में बड़ा बदलाव किया है जिसके तहत यूपी में प्रधानमंत्री आवास योजन (ग्रामीण) और मुख्यमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के नियमों में बड़ा बदलाव का ऐलान किया गया है। अब आवास केवल महिला मुखिया के नाम पर ही स्वीकृत किए जाएंगे। यूपी के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने इसका ऐलान किया है। उन्होंने महिला सशक्तिकरण एवं

मिशन शक्ति अभियान को ध्यान में रखते हुए विभागीय अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये हैं।

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा है कि अपरिहार्य स्थिति को छोड़कर प्रधानमंत्री आवास योजना -ग्रामीण एवं मुख्यमंत्री आवास योजना- ग्रामीण के तहत दिये जाने वाले आवास केवल महिला मुखिया के नाम ही स्वीकृति किये जाएंगे और साथ ही पुरुष मुखिया के नाम स्वीकृत आवासों को महिला मुखिया का नाम अनिवार्य रूप से जोड़ा जाएगा।

मौर्य ने कहा है कि अपरिहार्य स्थिति को छोड़कर प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) और मुख्यमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत पक्के आवास केवल महिला मुखिया के नाम ही स्वीकृत किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि महिला मुखिया के नाम आवास स्वीकृत किये जाने के पीछे उद्देश्य यह है कि उनके भीतर स्वामित्व का भाव आये तथा महिलाएं समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें। इसके तहत अब पुरुष के नाम स्वीकृत आवास में भी महिला मुखिया का नाम अनिवार्य रूप से जोड़ा जाएगा।

अंतरराष्ट्रीय पदक जीतने पर भारत के जूनियर एथलीट्स को नहीं मिलेगा नकद पुरस्कार, ये खिलाड़ी होंगे पात्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय पदक जीतने वाले जूनियर और सब जूनियर एथलीट्स को अब सरकार से नकद पुरस्कार नहीं मिलेंगे। दरअसल, ये बदलाव 1 फरवरी 2025 से लागू हो गया है। खेल मंत्रालय के इस बड़े नीतिगत बदलाव का उद्देश्य डोपिंग और आयु धोखाधड़ी के दोहरे खतरे से निपटना है और साथ ही युवाओं की भूख को जीवित रखना है। पुरानी प्रणाली के अनुसार जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतने वाले एथलीट को लगभग 13 लाख रुपये मिलते थे, जबकि एशियाई या राष्ट्रमंडल में पोडियम पर टॉप स्थान प्राप्त करने वाले एथलीट को 5 लाख रुपये का नकद पुरस्कार मिलता था। खेल मंत्रालय के एक पदाधिकारी ने द इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि इस निर्णय के पीछे एक प्रमुख कारक जूनियर प्रतियोगिताओं को पोडियम फिनिश केबजाय विकासात्मक आयोजनों के रूप में बढ़ावा देना था। अधिकारी ने कहा कि, हमने देखा है कि केवल भारत ही ऐसे मॉडल का अनुसरण करता है जहां जूनियर चैंपियनशिप को ज्यादा महत्व दिया जाता है। नतीजतन, हमने देखा है कि एथलीट इस स्तर पर इतनी मेहनत करते हैं कि जब तक वे एलीट स्टेज पर पहुंचते हैं तब तक वो या तो थक जाते हैं या उनकी भूख खत्म हो जाती है। इसके साथ ही, खेल मंत्रालय ने मल्लखंब, ई-स्पोर्ट्स और यहां तक कि आलोचकों के निभाने पर आ रहे ब्रेक-डांसिंग के वर्ल्ड और महाद्वीपीय चैंपियनशिप के पदक विजेताओं को नकद पुरस्कार मिलने का पात्र बना दिया है। पीटीआई की खबर के मुताबिक, खेल मंत्रालय ने 51 खेलों की एक सूची जारी की है जिनमें पदक जीतने वाले नकद पुरस्कार के लिए पात्र होंगे। इसमें वे सभी खेल शामिल हैं जो ओलंपिक खेलों, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व विद्यालय खेलों के कार्यक्रम का हिस्सा हैं। इस सूची में खो-खो भी शामिल है, जिसका पहला विश्व कप पिछले महीने दिल्ली में हुआ था।

हर्षित राणा की गलती पर बिफर पड़े कप्तान रोहित शर्मा

नई दिल्ली (एजेंसी)। कटक में भारत और इंग्लैंड के बीच वनडे सीरीज का दूसरा मुकाबला खेला जा रहा है। टॉस जीतकर इंग्लैंड ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.5 ओवर में 304 रन बनाए हैं। दोनों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिल रही है। इंग्लैंड के खिलाफ पहले वनडे में बेहतरीन गेंदबाजी करने वाले हर्षित राणा पर रोहित शर्मा जमकर बिफर पड़े। दरअसल, हर्षित राणा दूसरे मैच में टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा के लपेटे में आ गए। जहां इस मैच में हर्षित राणा ने एक ऐसी हरकत कर दी। जिसके बाद कप्तान खुद पर काबू नहीं रख पाए और युवा खिलाड़ी पर जमकर सुना दी। कटक के बाराबती स्टेडियम में खेले जा रहे इस दूसरे वनडे मैच के दौरान हर्षित राणा ने एक भारी गलती कर दी। जिसके बाद रोहित शर्मा को उन पर खतरनाक गुस्सा आ गया। दरअसल, हुआ यूं कि इंग्लैंड की पारी को 32वां ओवर चल रहा था। जिसे हर्षित राणा डाल रहे थे। इस ओवर में हर्षित ने बेहतरीन गेंदबाजी की और पहली चार गेंदों में कोई रन नहीं दिया। इसके बाद ओवर की 5वीं गेंद भी बढ़िया रही और इंग्लैंड के बल्लेबाज जोस बटलर ने उस गेंद को फॉलोकरने के थ्रू में खेल दिया।

टेनिस स्टार सानिया मिर्जा ने दुबई में खरीदा नया घर, करोड़ों में है कीमत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की टेनिस स्टार सानिया मिर्जा कई सालों से दुबई में रह रही हैं। हालांकि, वे भारत भी आती जाती रहती हैं। सानिया का दुबई में पहले से ही एक घर है वहीं उन्होंने दोबारा दुबई में करोड़ों का घर खरीदा है।

सानिया ने कर्ली यूट्यूब चैनल पर बताया कि वे कई सालों से टेनिस खेल रही हैं। इस कारण से वे सहूलियत के लिए दुबई में ही रहती हैं। हालांकि, सानिया बीच-बीच में भारत भी आती रहती हैं।

सानिया ने अपने दुबई वाले घर का इंटीरियर खुद ही डिजाइन किया है। सानिया के घर का बाहरी हिस्सा सफेद रंक का है। वहीं घर की अंदर की दीवार पर हाथी का प्रोप लगवा रखा है। ये गोल्डन रंक का है। साथ ही इसमें और भी महंगी चीजें लगाई गई हैं।

सानिया के लिविंग रूम में बड़ा डायनिंग टेबल है।

ओडिसा सरकार ने ब्लॉक स्तरीय स्टेडियमों के निर्माण के लिए परियोजना को मंजूरी दी

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा सरकार ने राज्य के सभी 314 प्रखंड में स्टेडियमों के निर्माण की नयी परियोजना को मंजूरी दी है। राज्य मंत्रिमंडल ने पांच साल की इस योजना के लिए 4124 करोड़ रुपये के परिव्यय की मंजूरी दी है। इसका उद्देश्य जमीनी स्तर के खेल बुनियादी ढांचे को मजबूत करना है। यह कदम राज्य में स्वास्थ्य और कल्याण से जुड़े खेल पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के प्रति सरकार के समर्पण को दर्शाता है। इस परियोजना का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण खेल बुनियादी ढांचे के अंतर को कम करना है। खासकर ब्लॉक स्तर पर जहां सुविधाएं अविकसित हैं। यहां जारी बयान के मुताबिक, ''सरकार ने इस अंतर को पाटने की जरूरत पर ध्यान दिया है। इसमें खिलाड़ियों के लिए बेहतर अवसर प्रदान करना, स्थानीय प्रतिभाओं का पोषण करना और जमीनी स्तर पर अधिक खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करना शामिल है।'' इस योजना में ऐसे खेलों पर ज्यादा ध्यान दिया जाएगा जिसमें ओडिशा के खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया है।

चोट के कारण एलिसा हीली विमेंस प्रीमियर लीग 2025 से हुई बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। 14 फरवरी से वीमेंस प्रीमियर लीग 2025 का आगाज होने जा रहा है। जिसकी तैयारी जोरों शोरों से चल रही है और इसी बीच यूपी वॉरियर्स ने रविवार को अपनी टीम की नई कप्तान का ऐलान किया है। दरअसल, यूपी की नियमित कप्तान एलिसा हीली चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हो गई हैं। महिला प्रीमियर लीग के पहले 2 सीजन में कुछ खास प्रदर्शन नहीं कर पाने वाली यूपी वॉरियर्स ने अब तीसरे सीजन के लिए टीम की कप्तानी टीम इंडिया की स्टार ऑलराउंडर खिलाड़ी दीप्ति शर्मा को सौंपी है। दीप्ति ने पिछले कुछ सालों में टीम इंडिया के लिए जबरदस्त कामयाबी हासिल की है। उनकी इस कामयाबी को देखते हुए यूपी वॉरियर्स ने अब उन्हें टीम की कप्तानी सौंपी है। दीप्ति ने ऑस्ट्रेलियाई कप्तान एलिसा हीली को रिप्लेस किया है जो चोट के कारण टूर्नामेंट में हिस्सा नहीं ले रही है।

महिला प्रीमियर लीग के इतिहास में हैट्रिक लेने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी के रूप में नाम स्थापित करवा चुकी दीप्ति शर्मा का इस लीग में शानदार सफर रहा है और वो इस टीम की सबसे अनुभवी खिलाड़ियों में से एक है। दीप्ति शर्मा अब अपनी होम टीम यूपी की महिला प्रीमियर लीग की टीम की कप्तानी करती हुई नजर आएंगी। दीप्ति शर्मा को टीम में ताहलिया मैक्ग्रा, चमारी अट्टापट्टू, ग्रैस हैरिस जैसी कुछ बेहतरीन इंटरनेशनल खिलाड़ी होने के बावजूद नेतृत्व दिया गया है।

रोहित शर्मा ने इस मामले में राहुल द्रविड़ को पछाड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। कटक में भारत और इंग्लैंड के बीच दूसरा वनडे मैच खेला जा रहा है। इस मुकाबले में भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने कटक में इंग्लैंड के खिलाफ खेले जा रहे हैं दूसरे वनडे मैच में दो बड़े काम किए हैं। रोहित इस मैच से पहले राहुल द्रविड़ को पीछे छोड़ने के करीब था। अपनी बल्लेबाजी से रोहित ने ये काम कर दिया है। इतना ही नहीं, रोहित ने वेस्टइंडीज के तूफानी बल्लेबाजी क्रिस गेल को भी पछाड़ दिया है।

रोहित वनडे क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में राहुल द्रविड़ से आगे निकल गए हैं। राहुल के 344 वनडे मैचों में 10,889 रन हैं। इस मैच से पहले रोहित के 267 मैचों में 10,868 रन थे। वह 22 रन पीछे थे। कटक में रोहित ने इतने रन बना लिए और राहुल को पछाड़ दिया है।

रोहित ने पारी की शुरुआत में दो शानदार छक्के मारे। इसी के साथ वह वनडे में सबसे ज्यादा छक्के लगाने के मामले में गेल से आगे निकल गए हैं। गेल के नाम वनडे में 331 छक्के हैं। रोहित इससे आगे निकल गए हैं। रोहित इस मैच में अपने पुराने रंग में नजर आ रहे हैं। उन्होंने दूसरे ओवर की पांचवीं गेंद पर गस एटकिंसन पर छक्का लगाया। तीसरे ओवर की दूसरी गेंद पर उन्होंने साकिब महमूद की गेंद पर एक और बेहतरीन छक्का जड़ दिया।

जल्द जारी होगा आईपीएल 2025 का शेड्यूल

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 का आगाज 21 मार्च से होना है। टूर्नामेंट के शेड्यूल को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक इंडियन प्रीमियर लीग के 18वें सीजन का फुल शेड्यूल इस हफ्ते जारी हो सकता है। टूर्नामेंट का पहला मैच पिछले सीजन की फाइनलिस्ट टीमों के बीच आयोजित होगा। कोलकाता नाइट राइडर्स ने पिछले सीजन का खिताब जीता था। उसने फाइनल में सनराइजर्स हैदराबाद को हराया था। खेल पत्रकार विजय टैगोर ने एक्स के जरिए आईपीएल 2025 को लेकर अपडेट दिया है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट करके बताया कि आईपीएल 2025 का शेड्यूल जल्द ही जारी हो सकता है। हालांकि, इसको लेकर अभी तक किसी भी तरह की ऑफिशियल जानकारी नहीं मिली है। टूर्नामेंट का आगाज 14 मार्च होना था। लेकिन बाद में इसे आगे बढ़ा दिया गया था। अब ये 21 मार्च से खेला जाएगा। टूर्नामेंट का पहला मैच पिछले सीजन की फाइनलिस्ट के बीच खेला जाता है। लिहाजा इस बार भी ये परंपरा आगे बढ़ सकती है। आईपीएल 2024 का फाइनल कोलकाता और हैदराबाद के बीच खेला गया था। इस बार आईपीएल 2025 का पहला मैच इन दोनों टीमों के बीच खेला जा सकता है। ये मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डन्स में आयोजित हो सकता है।

साउथ अफ्रीका ने एनरिक नॉर्खिया के रिप्लेसमेंट का किया ऐलान, इस खिलाड़ी को दिया मौका

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीठ की चोट के कारण आईसीसी पुरुष चैंपियंस ट्रॉफी 2025 से बाहर होने वाले एनरिक नॉर्खिया की जगह दक्षिण अफ्रीका की 15 सदस्यीय टीम में एक नये खिलाड़ी को शामिल किया गया। टूर्नामेंट के लिए दक्षिण अफ्रीका के टीम की घोषणा कनरे के कुछ दिनों बाद एनरिक नॉर्खिया को पीठ की चोट के कारणम टीम से हटने के लिे मजबूर होना पड़ा था।

क्रिकेट साउथ अफ्रीका ने आखिरकार 30 साल के कॉर्बिन बॉश के रूप में उनके प्रतिस्थापन की घोषणा की है। कॉर्बिन बॉश ने पिछले साल दिसंबर में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में डेब्यू किया था। उन्होंने अब तक सिर्फ एक वनडे और एक टेस्ट खेला है।

कॉर्बिन बॉश के साथ दक्षिण अफ्रीका ने तेज गेंदबाज क्वेना मफाका को भी रिजर्व खिलाड़ी के तौर पर टीम में शामिल किया गया है। दोनों तेज गेंदबाज बल्लेबाज टोनी डी जोरजी के सात रविवार 9 फरवरी को पाकिस्तान जाएंगे और अपनी वनडे सीरीज के बाकी बचे मैचों के लिए टीम से जुड़ेंगे। दक्षिण अफ्रीका टीम सोमवार को लाहौर में न्यूजीलैंड से और बुधवार को कराची में पाकिस्तान से भिड़ेगी।

साउथ अफ्रीका अगर त्रिकोणयी सीरीज के फाइनल के लिए क्वालिफाई करता है तो शुक्रवार को फिर से कराची में खेलेगा। चैंपियंस ट्रॉफी टूर्नामेंट बुधवार, 19 फरवरी से शुरू हो रहा है और साउथ अफ्रीका अपना पहला मैच शुक्रवार 21 फरवरी को अफगानिस्तान के खिलाफ खेलेंगे। टेम्बा बावुमा (कप्तान), कॉर्बिन बॉश, टोनी डी जोरजी, मार्को यानसेन, हेनरिक क्लासेन, केशव महाराज, एडेन मार्कराम, डेविड मिलर, वियान मुल्डर, लुंगी एनगिडी, कगिसो रबाडा, रेयान रिकेल्टन, तबरेज शम्सी, ट्रिस्टन स्टब्स और रासी वैन डेर डुसेन। ट्रैवल रिजर्व- क्वेना मफाका।

आर अश्विन का बयान, कहा- भारत के बाद चैंपियंस ट्रॉफी में न्यूजीलैंड सबसे मजबूत टीमों में से एक

नई दिल्ली (एजेंसी)। महान स्पिनर आर अश्विन ने भारत और न्यूजीलैंड को चैंपियंस ट्रॉफी के लिए सबसे मजबूत टीमें करार देते हुए कहा कि मुख्य खिलाड़ियों के चोटिल होने के बावजूद ऑस्ट्रेलिया को हल्के में नहीं लिया जा सकता है क्योंकि बड़ी प्रतियोगिताओं में यह टीम अपने खेल के शीर्ष पर होती है। आईसीसी का यह प्रमुख टूर्नामेंट 19 फरवरी को पाकिस्तान में शुरू होगा लेकिन भारत अपने सभी मैच हाइब्रिड मॉडल के तहत दुबई में खेलेगा।

अश्विन ने अपने 'यूट्यूब चैनल' पर कहा, ''भारत को दुबई में घरेलू माहौल जैसे मैदान पर खेलने का फायदा मिलेगा। भारत का सामना करने वाली टीमों को लगेगा कि वे भारतीय परिस्थितियों में ही खेल रहे हैं। यह निश्चित रूप से अन्य टीमों के लिए एक समस्या है।'' अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कई वर्षों के अंतराल के बाद त्रिकोणीय श्रृंखला की वापसी हुई और अश्विन का मानना है कि भारतीय टीम को भी चैंपियंस ट्रॉफी की बेहतर तैयारी के लिए इंग्लैंड के खिलाफ द्विपक्षीय श्रृंखला के बजाय त्रिकोणीय टूर्नामेंट में खेलना चाहिए था। भारत के इस पूर्व स्पिनर ने कहा, ''इंग्लैंड के खिलाफ खेलकर क्या चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत की तैयारी पर्याप्त होगी? क्या हमें त्रिकोणीय श्रृंखला भी खेलनी चाहिए थी? पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका पाकिस्तान की परिस्थितियों में खेल रहे हैं, जिससे उन्हें चैंपियंस ट्रॉफी में मदद मिलेगी।'' उन्होंने कहा, ''भारत ने इस बड़े टूर्नामेंट से पहले सिर्फ इंग्लैंड के खिलाफ खेला है। दुबई में पिछली बार टी20 विश्व कप को लेकर हमारे पास सुखद यादें नहीं है। दुबई में टॉस वास्तव में महत्वपूर्ण हो जाता है। मुझे लगता है कि टॉस जीतना महत्वपूर्ण होगा।'' अश्विन ने कहा कि ट्रेंट बोल्ट और टिम साउदी की गैरमौजूदगी में भी न्यूजीलैंड भारत के लिए मुश्किल चुनौती पेश करेगा। उन्होंने कहा, ''भारत के बाद, न्यूजीलैंड चैंपियंस ट्रॉफी में सबसे मजबूत टीमों में से एक है। साउदी और बोल्ट जैसे खिलाड़ी नहीं खेल रहे हैं इसलिए उनके गेंदबाजी आक्रमण पर सवालिया निशान है। मैट हेनरी के साथ टीम में कौन होगा? क्या यह विल ओ-राउरकी होंगे, जो अगली पीढ़ी का चैंपियन बनने की क्षमता रखते हैं। क्या यह बेन सीयर्स होंगे? ''

उन्होंने कहा, '' न्यूजीलैंड के पास माइकल ब्रेसवेल और ग्लेन फिलिप्स के साथ एक अनुभवी स्पिन आक्रमण है। यह देखना होगा कि कप्तान मिचेल सेंटनर अपने संसाधनों को किस तरह से इस्तेमाल करते है।

न्यूजीलैंड निश्चित रूप से एक मजबूत टीम है। वे भारत को चुनौती देने वालों में से एक हैं।'' अश्विन ने कहा कि आईसीसी टूर्नामेंटों में ऑस्ट्रेलिया हमेशा एक मजबूत टीम रही है। उन्होंने कहा, '' कप्तान के रूप में स्टीव स्मिथ शानदार है। स्मिथ चैंपियंस ट्रॉफी में टीम की कप्तानी करने जा रहे हैं। क्या स्मिथ, हेड, मैक्सवेल और लाबुशेन ने टीम को सेमीफाइनल तक पहुंचा पायेंगे? मेरा हमेशा से मानना है कि ऑस्ट्रेलिया एक चैंपियन टीम है जो हमेशा प्रमुख टूर्नामेंटों में अपने खेल के शीर्ष पर होती है।

मुख्यमंत्री ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग से महाकुंभ यात्रियों के लिए की गई व्यवस्थाओं की समीक्षा की

महाकुंभ यात्रियों के लिए रीवा संभाग में की गई व्यवस्थाओं ने बढ़ाया प्रदेश का मान

जनप्रतिनिधि, प्रशासन और स्वयंसेवी संगठन मिलकर तीर्थयात्रियों की सेवा करें - मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा /सतना (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रयागराज महाकुंभ के लिए रीवा से होकर जाने वाले तीर्थयात्रियों की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाकुंभ के कारण लाखों यात्री मध्यप्रदेश की धरती से होकर प्रयागराज में महाकुंभ का पुण्य लाभ लेने जा रहे हैं। इन्हें सभी स्थानों पर बेहतर सुविधाएं दी जा रही हैं। रीवा संभाग के सभी जिलों में तीर्थयात्रियों के लिए की गई व्यवस्थाओं ने प्रदेश का मान बढ़ाया है। प्रयागराज में अधिक भीड़ के कारण रीवा संभाग के जिन स्थानों में वाहन रोकने की व्यवस्था की गई है उनमें सेवाभाव से तीर्थयात्रियों की सहायता करें। भोजन, पानी, ठहरने और उपचार की सुविधा 27 फरवरी तक लगातार जारी रखें। जनप्रतिनिधि, प्रशासन और स्वयंसेवी संगठन मिलकर तीर्थयात्रियों की सेवा करें। रीवा प्रयागराज जाने का मुख्य प्रवेश द्वार है। महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और छत्तीसगढ़ से हजारों वाहन प्रतिदिन रीवा संभाग के विभिन्न जिलों से गुजरते हुए प्रयागराज पहुंच रहे हैं। प्रयागराज प्रशासन से समन्वय बनाकर वाहनों के सुगम आवागमन की व्यवस्था सुनिश्चित करें। प्रशासनिक अधिकारी, जनप्रतिनिधियों और स्वयंसेवी संगठनों के साथ बैठक करके उनके सुझावों के अनुसार व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कलेक्ट्रेट के एनआईसी केन्द्र से उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि 10 जनवरी से ही प्रशासन ने रीवा प्रयागराज मार्ग के विभिन्न स्थानों पर बोर्डिंग प्वाइंट बनाकर वाहनों को व्यवस्थित करने तथा रैन बसेरा में तीर्थयात्रियों के लिए व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के प्रबंध किए हैं। अधिकारी-कर्मचारी 24 घंटे तैनात रखकर तीर्थयात्रियों के लिए भोजन, पानी, ठहरने और उपचार की व्यवस्था में लगे हुए हैं। पार्टी के कार्यकर्ता तथा सामाजिक संगठन भी पूरे मन से तीर्थयात्रियों की सेवा कर रहे हैं। विधायक त्योंथर सिद्धार्थ तिवारी ने कहा कि मुख्यमंत्री जी आपकी दूरदर्शिता के कारण महाकुंभ शुरू होने से पहले ही चाकघाट में प्रशासन ने समुचित व्यवस्थाएं जन सहयोग से सुनिश्चित कर दी। जिसके कारण 29 जनवरी को उमड़ी भीड़ का प्रबंधन कुशलता से हो गया। किसी प्रकार की दुर्घटना नहीं हुई। चाकघाट में जनपद पंचायत, नगर पंचायत तथा आसपास की ग्राम पंचायतों के सहयोग से एक महीने से तीर्थयात्रियों को निःशुल्क भोजन कराया जा रहा है। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में विधायक मनगवां नरेन्द्र प्रजापति ने कहा कि मेरी विधानसभा में तीन स्थानों में वाहनों के रूकने की व्यवस्था की गई है। जोगिनिहाई टोल प्लाजा, मनगवां तथा श्रीयुत महाविद्यालय गंगेव में सबके सहयोग से तीर्थयात्रियों को भोजन कराया जा रहा है। भाजपा जिलाध्यक्ष वीरेन्द्र गुप्ता ने कहा कि आपके निर्देशन पर प्रशासन और जनप्रतिनिधियों की टीम ने कठिन समय में तीर्थयात्रियों की बढ़ चढ़कर सेवा की है इसके लिए आपका बहुत-बहुत आभार है। प्रशासन ने चुस्त-दुरूस्त व्यवस्था रखकर भीड़ को नियंत्रित किया तथा तीर्थयात्रियों की सेवा की।

वीडियो कान्फ्रेंसिंग में कमिश्नर रीवा बीएस जामोद ने रीवा संभाग के सभी जिलों में तीर्थयात्रियों के लिए की गई व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी दी। कमिश्नर ने बताया कि मैहर से चाकघाट तक 13 स्थानों पर वाहनों के रोकने के स्थान बनाए गए हैं। इन सभी में यात्रियों के ठहरने, भोजन, पानी, चाय और उपचार की पूरी सुविधा है। प्रशासन और पुलिस की टीम 24 घंटे इनमें तैनात रहती है। यात्रियों की सेवा में जनप्रतिनिधियों और सामाजिक संगठनों द्वारा भी पूरा सहयोग किया जा रहा है। आमजनता भी सेवाभाव से तीर्थयात्रियों की सहायता कर रही है। सभी स्थानों पर मेडिकल टीम तैनात है। प्रभारी आईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय ने बताया कि मैहर से चाकघाट तक सेक्टर बनाकर सुरक्षा और यातायात का प्रबंधन किया जा रहा है। प्रत्येक सेक्टर में गजेटेड पुलिस आफीसर बल के साथ तैनात हैं। इसके साथ-साथ पेट्रोलिंग पार्टी भी लगातार भ्रमण करके वाहनों को व्यवस्थित कर रहे हैं। प्रयागराज के अधिकारियों से निरंतर संपर्क बनाकर वहाँ स्थान बनने पर वाहनों को छोड़ा जाता है।

मैहर से चाकघाट तक 10 फरवरी को यातायात सामान्य है। कहीं पर भी जाम की स्थिति नहीं है। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, पूर्व विधायक पंचूलाल प्रजापति, पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी, कलेक्टर प्रतिभा पाल, पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह तथा जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे। वीडियो कान्फ्रेंसिंग में सभी जिलों के कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक एवं जनप्रतिनधि भी शामिल रहे।

कुंभ यात्रियों के लिए सतना पुलिस ने लगाया कैंप

एनएच और स्टेट हाईवे पर श्रद्धालुओं को बांट रहे फल, बिस्किट, नाश्ता और पानी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना पुलिस प्रशासन ने महाकुंभ यात्रा पर जा रहे श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए विशेष इंतजाम किए हैं। मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव के निर्देश पर सोमवार सुबह से नेशनल हाइवे और स्टेट हाइवे पर पुलिस की विशेष टीमें तैनात की गई हैं। सभी थानों के पुलिसकर्मी प्रयागराज महाकुंभ जा रहे श्रद्धालुओं को फल, बिस्किट, नाश्ता और पानी का वितरण कर रहे हैं।

यात्रियों के लिए भोजन की व्यवस्था: सड़क किनारे विशेष कैंप लगाकर यात्रियों, खासकर बच्चों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई है। नागौद, मझगवां, सिविल लाइन थाना और रामपुर बघेलान पुलिस की ओर से सतना-मैहर सीमा पर स्थित नेशनल हाईवे 30 के कटहा मोड़ पर विशेष व्यवस्था की गई है। यहां श्रद्धालुओं को पानी की बोतलें और लंच पैकेट वितरित किए जा रहे हैं, जिससे वे अपनी लंबी यात्रा आरामदायक तरीके से पूरी कर सकें। रामपुर बघेलान थाना प्रभारी संदीप चतुर्वेदी के नेतृत्व में तैनात पुलिस बल यात्रियों को इन सुविधाओं का लाभ पहुंचा रहा है। पुलिस प्रशासन की यह पहल श्रद्धालुओं की यात्रा को सुगम और सुरक्षित बनाने में मददगार साबित हो रही है।

महाकुंभ के वजह से मैहर मां शारदा मंदिर में बढ़ी भीड़

29 दिनों में साढ़े 24 लाख श्रद्धालुओं ने किए मां शारदा के दर्शन, एक दिन में आए 2.64 लाख भक्त

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मैहर में प्रयागराज महाकुंभ का व्यापक प्रभाव देखने को मिल रहा है। प्रयागराज महाकुंभ की शुरुआत से लेकर 9 फरवरी तक, मां शारदा के दर्शन के लिए साढ़े 24 लाख से अधिक श्रद्धालु मैहर पहुंचे हैं। सबसे अधिक भीड़ 27 जनवरी को देखी गई, जब एक ही दिन में 2 लाख 64 हजार 395 भक्तों ने मंदिर में दर्शन किए।

एसडीएम विकास सिंह ने बताया कि गणतंत्र दिवस पर 1.5 लाख, 30 जनवरी को 2.4 लाख और 31 जनवरी को 2.6 लाख श्रद्धालुओं ने मां के दर्शन किए। फरवरी में, प्रतिदिन औसतन 1.5 से 2 लाख भक्त मंदिर पहुंच रहे हैं। रविवार को भी, भारी यातायात के बावजूद, रात 10 बजे तक करीब 1.90 लाख भक्तों ने दर्शन किए। बढ़ती भीड़ को देखते हुए, जिला प्रशासन ने मंदिर के दर्शन के समय में बदलाव किया है। नवरात्रि की तरह, अब मंदिर सुबह 4 बजे से रात 12 बजे तक खुला रहता है। अधिकांश श्रद्धालु, प्रयागराज में कुंभ स्नान के बाद, परिवार सहित मैहर पहुंच रहे हैं। प्रशासन और पुलिस की सुव्यवस्थित व्यवस्था के कारण, श्रद्धालुओं को सुगमता से दर्शन का अवसर मिल रहा है। दूर-दराज से आए भक्तों ने भी प्रशासनिक व्यवस्था की सराहना की है।

सतना में नाबालिग ने जीप चलाकर पांच बाइक-साइकिल को रौंदा

ब्रेक की जगह क्लच दबाया, हादसे में एक महिला घायल; अस्पताल में भर्ती

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में सिटी कोतवाली अंतर्गत एक नाबालिग ने जीप से झूलेलाल मंदिर के पास 5 बाइकों समेत कई साइकिलों को रौंद दिया। हादसे में महिला बरखा वर्मा घायल हो गई। दरअसल, अमित रैकवार (17) ने गलती से ब्रेक की जगह क्लच दबा दिया था। जिससे हादसा हो गया। घायल वर्मा को राहगीरों की मदद से अस्पताल लाया गया। हालांकि, प्राथमिक उपचार के बाद उसे घर भेज दिया गया। पुलिस ने आरोपी रैकवार को हिरासत में लिया है। दरअसल, बजरहा टोला निवासी नाबालिग चालक ने पूछताछ में बताया कि वह अपने घर से जीप लेकर निकला ही था कि उसने गलती से ब्रेक की जगह क्लच दबा दिया, जिससे हादसा हो गया। जीप ने सड़क किनारे खड़ी 5 बाइक और साइकिलों को क्षतिग्रस्त कर दिया। इसी दौरान घर के बाहर अस्पताल जाने के लिए बैठी महिला बरखा वर्मा भी जीप की चपेट में आ गई। घायल होने पर वर्मा को अस्पताल में भर्ती कराया गया। प्राथमिक उपचार के बाद उसे घर पर भेज दिया गया। इधर, सिटी कोतवाली के टीआई रावेंद्र द्विवेदी के ने बताया आरोपी नाबालिग को हिरासत में ले लिया गया है और मामले की जांच की जा रही है।

फीडर सेपरेशन में देरी करने वाली निर्माण एजेंसी को ब्लैकलिस्टेड करने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा/ सतना (निप्र)। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने ऊर्जा विभाग की आरडीएसएस योजना के निर्माण कार्यों की समीक्षा की। कमिश्नर कार्यालय में आयोजित बैठक में कमिश्नर ने कहा कि आरडीएसएस योजना का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को निर्बाध और पर्याप्त बिजली की आपूर्ति की व्यवस्था करना है। इस योजना से स्वीकृत निर्माण कार्यों की समय सीमा समाप्त हो गई है। योजना के तहत फीडर सेपरेशन में देरी करने वाली निर्माण एजेंसियों को ब्लैकलिस्टेड करने की कार्यवाही करें। वर्तमान में जारी निर्माण कार्यों को दो माह में पूरा कराएं। ऊर्जा विभाग के सभी अधिकारी बिजली उपभोक्ताओं से सतत संपर्क में रहकर बिजली आपूर्ति की समस्याओं का निराकरण करें। बिगड़े ट्रांसफार्मर तीन दिन की समय सीमा में अनिवार्य रूप से बदलें। न्यूनतम 10 प्रतिशत राशि जमा न करने से जो ट्रांसफार्मर बंद हैं उनमें उपभोक्ताओं से लंबित राशि जमा कराकर बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित करें। कमिश्नर ने बैठक से बिना सूचना अनुपस्थित सीधी के कार्यपालन यंत्री तथा अधीक्षण यंत्री को नोटिस देने के निर्देश दिए। कमिश्नर ने कहा कि आरडीएसएस योजना से संभाग में 21 सब स्टेशनों का निर्माण स्वीकृत किया गया है। इनमें से केवल 13 का निर्माण कार्य पूरा हुआ है। शेष 8 सब स्टेशनों का निर्माण कार्य दो माह में पूरा कराएं। इनके निर्माण में यदि किसी तरह की बाधा है तो साप्ताहिक टीएल बैठक में कलेक्टर के माध्यम से विभागीय समन्वय बनाकर बाधा दूर कराएं। फीडर सेपरेशन 590 फीडरों में किया जाना है। इनमें से केवल 172 में सेपरेशन का कार्य पूरा हुआ है। शेष कार्य में गति लाएं। आगामी समीक्षा बैठक में निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधियों की भी उपस्थिति सुनिश्चित करें। सीएम हेल्पलाइन के लंबित प्रकरणों को तत्परता से निराकृत करें। बिजली की आपूर्ति तथा बिलों में सुधार के प्रकरण पर विशेष ध्यान दें। शिकायतों को लेबल-1 पर ही निराकृत करने के प्रयास करें। बैठक में एडिशनल चीफ इंजीनियर रमा पाण्डेय ने विभागीय कार्यों की जानकारी दी। बैठक में अधीक्षण यंत्री रीवा बीके शुक्ला ने बताया कि रीवा में स्वीकृत बैठक में एडिशनल चीफ इंजीनियर रमा पाण्डेय ने विभागीय कार्यों की जानकारी दी।

बैठक में अधीक्षण यंत्री रीवा बीके शुक्ला ने बताया कि रीवा संभाग में स्वीकृत 21 सब स्टेशनों में से 14 का निर्माण पूरा हो चुका है। सीधी में निर्माण एजेंसी द्वारा पर्याप्त प्रयास न करने के कारण फीडर सेपरेशन के कार्य की प्रगति कम है। सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण के लिए सब स्टेशन स्तर पर शिविर लगाकर प्रकरणों का निराकरण किया जा रहा है। हाल ही में रीवा में चोरहटा में विद्युत सब स्टेशन का लोकार्पण किया गया है। इससे औद्योगिक क्षेत्र चोरहटा तथा आसपास के पूरे क्षेत्र की बिजली आपूर्ति व्यवस्था में सुधार होगा। बैठक में संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी तथा संभाग के सभी जिलों के ऊर्जा विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

देहदान व अंगदान को प्रोत्साहित करने के निर्णय का डिप्टी सीएम ने किया स्वागत

मीडिया ऑडीटर, रीवा/ सतना (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देहदान एवं अंगदान को प्रोत्साहन देने और देहदान करने वाले नागरिकों का सम्मान करने के लिये ऐतिहासिक निर्णय लिये हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने इस पहल के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव का अभिनंदन किया है और आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि यह समाज के लिए प्रेरणादायक कदम है। उन्होंने कहा कि देहदान और अंगदान जीवन का सबसे महान दान है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव का यह निर्णय निश्चित ही अधिक से अधिक लोगों को अंगदान और देहदान के लिए प्रेरित करेगा। इसके माध्यम से अनेक लोगों को नया जीवन प्राप्त होगा। उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि यह पहल चिकित्सा सेवा क्षेत्र को नई दिशा प्रदान करेगी, साथ ही समाज में मानवता एवं सेवा के मूल्यों को भी प्रोत्साहित करेगी। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने उन सभी व्यक्तियों और परिवारजन का अभिनंदन किया है जिन्होंने अंगदान और देहदान के लिए स्वीकृति दी है। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने देहदान करने वाले व्यक्तियों का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ करने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही प्रदेश में अंग प्रत्यारोपण से संबंधित एक राज्यस्तरीय संस्थान की स्थापना की जाएगी। अंगदान करने वाले व्यक्तियों के परिवारों को आयुष्मान कार्ड प्रदान करने और राष्ट्रीय पर्वों पर सम्मानित करने का निर्णय भी लिया गया है। उन्होंने यह भी निर्णय लिया है कि प्रदेश के सभी मेडिकल कॉलेजों में अंगदान एवं अंग प्रत्यारोपण की सुविधाओं की व्यवस्था की जाएगी।

सुरक्षा और यातायात प्रबंधन के साथ तीर्थयात्रियों की सेवा कर रहे पुलिस अधिकारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा /सतना (निप्र)। 10 फरवरी 2025. प्रयागराज में महाकुंभ मेले के कारण रीवा संभाग के मैहर, सतना और रीवा जिले के सभी प्रमुख मार्गों पर लगातार वाहनों का दबाव बना रहा। रीवा जिले में बेला, जोगिनिहाई, गंगेव, सोहागी तथा चाकघाट में वाहनों के ठहरने की व्यवस्था की गई। प्रशासन के साथ-साथ पुलिस अधिकारी भी रात-दिन सड़कों पर तैनात रहकर व्यवस्था बनाने में जुटे रहे। सुरक्षा और यातायात प्रबंधन के साथ पुलिस अधिकारियों ने तीर्थयात्रियों को सेवाभाव से भोजन कराया। वाहन रोककर तीर्थयात्रियों को पानी तथा नाश्ता प्रदान किया। डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय के मार्गदर्शन में संभाग के सभी जिलों में पुलिस अधीक्षक एवं अन्य पुलिस अधिकारी यातायात प्रबंधन तथा सुरक्षा व्यवस्था में लगातार जुटे रहे। यातायात को सुगम बनाने के लिए वाहनों के मार्ग में परिवर्तन करने, वाहनों को रोकने, टोल प्लाजा में लगने वाले जाम की समस्या को दूर करने में भी पुलिस अधिकारी मुस्तैदी से तैनात रहे। पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनकर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक लाल, प्रशिक्षु आईपीएस ओमप्रकाश लगातार भ्रमण करके स्थिति का जायजा ले रहे हैं। यातायात की दृष्टि से सबसे कठिन स्थल सोहागी घाटी तथा चाकघाट में एसडीओपी त्योंथर उदित मिश्रा एवं एसडीओपी सिरमौर उमेश प्रजापति मुस्तैदी से तैनात हैं। वाहनों के लगातार दबाव के बीच यातायात को सुगम बनाने के लिए लगातार प्रयास किए गए।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।